नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 366, नई दिल्ली, शुक्रवार 06 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

02 मैनीक्योर और पेडिक्योर के फायदे : शहनाज़ हुसैन
06 कंक्रीट की दीवारें: भारतीय घरों के लिए सही फिट : संजय गोयनका
08 नीतीश कुमार का राज्यसभा जाना : बिहार की राजनीति के लिए संकेत या नया मोड़?

फास्ट टैग रिचार्ज करते वक़्त एक गलती आपका पैसा फेक अकाउंट में भेज सकती है

पिंकी कुंडू

साइबर क्रिमिनल NHAI की वेबसाइट जैसी फेक वेबसाइट बनाकर लोगों को टारगेट कर रहे हैं। ये वेबसाइट्स Google सर्च में टॉप पर भी आ सकती हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वो ऑथेंटिक हैं।

लोग QR स्कैन करते हैं, एनुअल पास सेलेक्ट करते हैं, पेमेंट कर देते हैं और पैसा डायरेक्ट स्कैम अकाउंट में ट्रांसफर हो जाता है।

ध्यान रखें:

* FASTag रिचार्ज सिर्फ NHAI की ऑफिशियल वेबसाइट से ही करें
* राजमार्गयात्रा ऐप सिर्फ ऑफिशियल ऐप स्टोर से डाउनलोड करें
* वेबसाइट का सही URL ध्यान से चेक करें
* सिर्फ "टॉप सर्च रिजल्ट" पर भरोसा न करें
* संदिग्ध वेबसाइट की तुरंत रिपोर्ट करें

स्कैमर अक्सर वेबसाइट बदलते रहते हैं इसलिए हमेशा अलर्ट रहें।

अगर आप साइबर फ्रॉड के शिकार हुए हैं, तो तुरंत 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

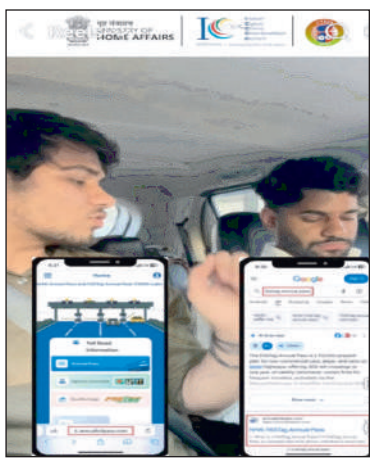

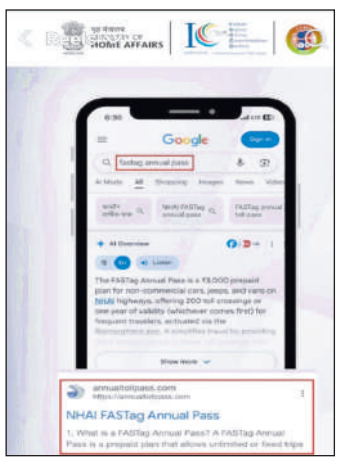

'डिजिटल अरेस्ट' ट्रैप से सावधान!

पिंकी कुंडू

हैदराबाद के DCP साइबरक्राइम, श्री वी. अरविंद बाबू, हाल ही में हुए 1.07 करोड़ के फ्रॉड केस के पीछे की सोफिस्टिकेटेड मशीनरी को तोड़ रहे हैं।

साइबर क्रिमिनल सिर्फ़ एक व्यक्ति नहीं होते; वे एक साथ काम करने वाले ऑर्गनाइज़्ड नेटवर्क होते हैं:

कम्युनिकेशन हबः VPN, VOIP कॉल और प्री-एक्टिवेटेड SIM का इस्तेमाल करके ट्रेस न हो पाना।

अकाउंट प्रोक्योरमेंटः चोरी के पैसे लेने और मूव करने के लिए 'म्यूल अकाउंट' बनाना।

मनी रूटिंगः ट्रेल छिपाने के लिए राज्यों में तेज़ी से ट्रांजैक्शन करना।

इन्वेस्टिगेशन अपडेटः हैदराबाद पुलिस ने आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मुंबई में 'फर्स्ट-लेयर' अकाउंट को सक्सेसफुली ट्रैक किया है, जिससे कुछ अहम अरेस्ट हुए हैं।

याद रखें, लॉ एनफोर्समेंट एजेंसियां आपको कभी भी वीडियो कॉल पर "अरेस्ट" नहीं करेंगी या आपका नाम साफ़ करने के लिए पैसे नहीं मांगेंगी।

पूरा एपिसोड देखें: https://www.youtube.com/live/INW2UjkgRjk

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

सड़क सुरंक्षा | महिला सुरक्षा
प्रदूषण | साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9
मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

8 मार्च 2026 को दिल्ली में दो नई मेट्रो लाइनों का उद्घाटन

DELHI METRO
AA News

1. पिंक लाइन एक्सटेंशन
(Majlis Park → Maujpur-Babarpur)
Majlis Park
Burari
Jharoda Majra
Jagatpur Village
Soorghat
Sonia Vihar
Khajuri Khas
Bhajanpura
Yamuna Vihar
Maujpur - Babarpur
लंबाई: ~12.3 किमी

2. मेनेंटा लाइन एक्सटेंशन
(Deepali Chowk → Majlis Park)
Deepali Chowk
Pitampura
Prashant Vihar
North Pitampura
Haiderpur Badli Mor
Bhalswa
Majlis Park
लंबाई: ~9.9 किमी

पूरे दिल्ली मेट्रो नेटवर्क पर रूट मैप

Phase-V(A) के 3 नए कॉरिडोर का शिलान्यास भी

दिल्ली मेट्रो – तेज, आधुनिक, ओर सुविधाजनक

फिटनेस के लिए दौड़ें। साइबर सेफ्टी के लिए दौड़ें

पिंकी कुंडू

15 मार्च 2026 को सुबह 7:00 बजे से कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में कम्युनिटी फिटनेस-कम-साइबरक्राइम अवेयरनेस इवेंट में हमारे साथ जुड़ें।

फिट इंडिया मूवमेंट (युवा मामले और खेल मंत्रालय) की पहल, इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर, गृह मंत्रालय और दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर, यह पहल फिटनेस, अवेयरनेस और डिजिटल ज़िम्मेदारी को एक साथ लाती है।

- 5 KM रन/वॉक
- योग और जुम्बा सेशन
- साइबरक्राइम अवेयरनेस एक्टिविटीज़

आइए एक सुरक्षित डिजिटल इंडिया को मज़बूत करते हुए एक हेल्दी इंडिया बनाएं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html I tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

"डिजिटल सेतुः नागरिकों, सेवाओं और विश्वास को जोड़ने वाला पुल — डिजिटल इंडिया तक आपका सुरक्षित मार्ग।"

डिजिटल सेतु क्या है?

डिजिटल सेतु (जिसमें API Setu भी शामिल है) डिजिटल इंडिया पहल का हिस्सा है, जिसे MeitY द्वारा संचालित किया जाता है। यह सरकारी विभागों, व्यवसायों और नागरिकों के बीच एक सुरक्षित, मानकीकृत डिजिटल सेवाओं का पुल है। इसके माध्यम से DigiLocker, Aadhaar, UPI और अन्य ई-गवर्नेंस सेवाओं को जोड़ा जाता है।

डिजिटल सेतु के लाभ

- इंटरऑपरेबिलिटीः कई सरकारी और निजी सेवाओं को सहजता से जोड़ता है (जैसे आधार प्रमाणीकरण के साथ DigiLocker)।
- नागरिक सुविधाः कागज़ी काम, कतारें और मैनुअल सत्यापन कम करता है।
- पारदर्शिता और जवाबदेहीः डिजिटल रिकॉर्ड भ्रष्टाचार और हेरफेर की संभावना घटाते हैं।
- वित्तीय समावेशनः Jio Setu जैसे सहायक प्लेटफ़ॉर्म स्मार्टफोन न रखने वाले नागरिकों को डिजिटल भुगतान और सेवाओं तक पहुँच देते हैं।
- विस्तार क्षमताः स्टार्टअप्स और डेवलपर्स को मानकीकृत APIs प्रदान कर नवाचार को बढ़ावा देता है।
- दक्षताः प्रमाणपत्र, लाइसेंस और भुगतान जैसी सेवाओं की तेज़ डिलीवरी।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

- डिजिटल विभाजनः स्मार्टफोन, इंटरनेट या डिजिटल साक्षरता न रखने वाले नागरिकों को कठिनाई।
- डेटा गोपनीयता चिंताएँः केंद्रीकृत डिजिटल ढाँचे में दुरुपयोग या डेटा लीक का खतरा।
- कनेक्टिविटी पर निर्भरताः ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में इंटरनेट की कमी से बहिष्करण।
- साइबर सुरक्षा जोखिमः धोखाधड़ी (जैसे QR कोड घोटाले, फ़िशिंग) का खतरा।
- कार्यान्वयन अंतरः अलग-अलग राज्यों और विभागों में असमान अपनाने से अनुभव खंडित हो सकता है।
- विश्वास की कमीः नागरिक धोखाधड़ी या डेटा दुरुपयोग के डर से अपनाने में हिचकिचा सकते हैं।

डिजिटल सेतु भारत की डिजिटल गवर्नेंस का एक मज़बूत साधन है, लेकिन इसकी सफलता डिजिटल विभाजन को कम करने, साइबर सुरक्षा को मज़बूत करने और नागरिकों का विश्वास बनाने पर निर्भर करती है।

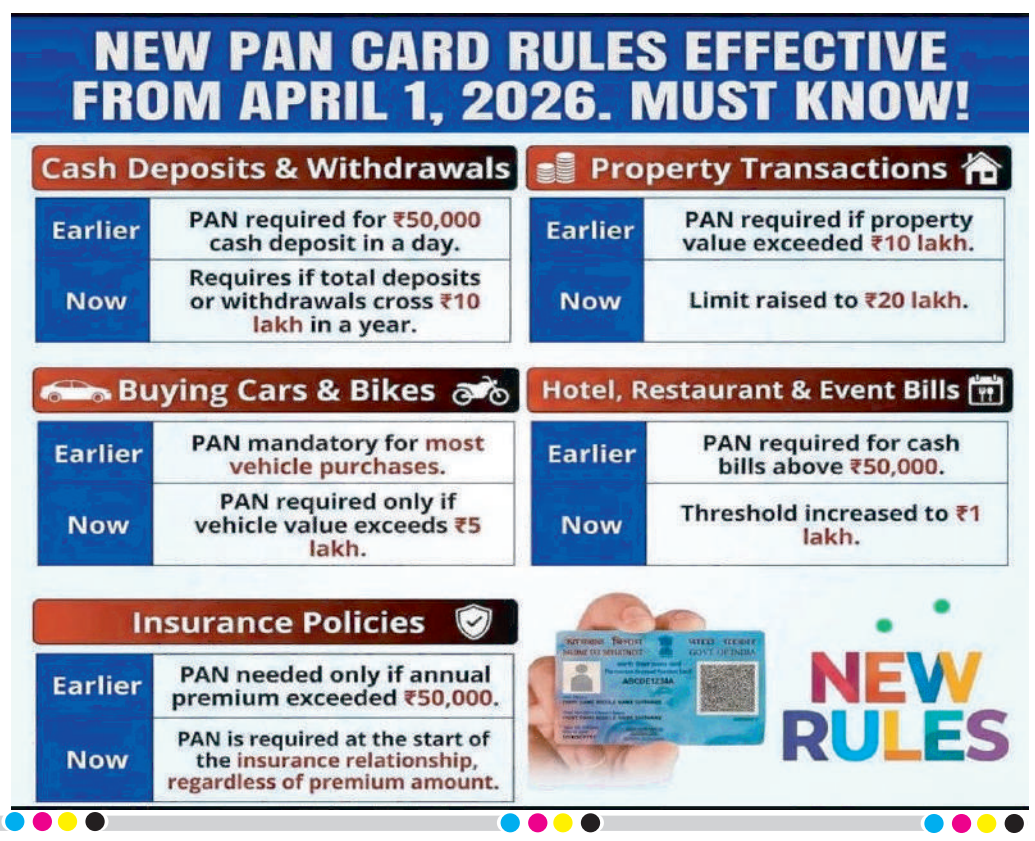

मैनीक्योर और पेडिक्योर के फायदे : शहनाज़ हुसैन

आप अक्सर कब अपने हाथों और नाखूनों को प्राथमिकता देते हो /

मैनीक्योर और पेडिक्योर की डेट नजदीक आते ही एक सुखद अहसास होने लगता है / हालाँकि हम मैनीक्योर और पेडिक्योर को शरीरिक सुन्दरता के पैमानों से ही आंकते हैं लेकिन इसके शरीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थय से भी अनेक फायदे होते हैं

मैनीक्योर और पेडिक्योर मात्र नाखूनों की सफाई ही नहीं है बल्कि यह सेल्फ केयर की एक जरूरी कड़ी है जिससे स्वास्थ्य लाभ होता है , सुन्दरता में निखार आता है , रक्त संचार बढ़ता है , हाइजीन को बढ़ाबा मिलता है और आत्म विस्वास बढ़ता है /

मैनीक्योर और पेडिक्योर से जहां आपकी त्वचा कोमल रहती है , आपके नाख़ून हेल्दी रहते हैं और आपका तनाव नियन्त्रण में रहता है बल्कि इसके और भी अनेक फायदे हैं /

इस सबके इलाबा यह सस्ता है , जल्दी हो जाता है और ट्रेंडी लुक पाने का आसान तरीका है /

1 ---बेहतर रक्त संचार ---------जब आप मैनीक्योर और पेडिक्योर करबाते हैं तो इसका एक फायदा यह होता है कि इस प्रक्रिया से आपके शरीर में बेहतर रक्त संचार होता है जिससे त्वचा में निखार आता है / ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने से शरीर में गर्मी बढ़ती है जोकि सर्दियों के मौसम में एक बेहतर अहसास दिलाती है / ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने से हाथों और पैरों की सूजन और दर्द कम होती है जिससे जोड़ों के रोगियों को राहत का अहसास होता है / ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने से आपकी स्किन टाइट होती है जिससे चेहरे और हाथो पैरों की झुर्रियां कम दिखती हैं और आप जवां जवां दिखते हैं / शरीर में बेहतर रक्त संचार आपके दिल कि सेहत के लिए भी लाभदायक होता है / आपका दिल जैसे ही रक्त को शरीर में धकेलता है , उस प्रक्रिया में आपके शरीर में स्वस्थ्य बर्धक नुट्रिएंट्स पौषक तत्व और ऑक्सीजन प्रवेश करती है और शरीर से गन्दे पदार्थों को बाहर निकाल देती है /

मैनीक्योर और पेडिक्योर की प्रक्रिया के दौरान किया जाने वाला हल्का स्पर्श, आरामदायक माहौल और इत्र की खुश्बू एक शौम्य और शांत प्रवृति का अहसास दिलाती है जिससे शरीर में तनाव और बेचैनी का स्तर कम होता है /

मैनीक्योर और पेडिक्योर के दौरान आप काफी बक्त अपनी केयर पर बिताते हैं जिससे आप मूड और बिस्वास बढ़ता है और आप ताजा और उर्जाबान महसूस करते हैं /

शरीर में रक्त संचार बढ़ने से गंदे और बिषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं , जिससे सम्पूर्ण वैलनेस को बढ़ाबा मिलता है और पैरों में फ्लूइड की मात्रा कम होती है /

इससे मांस पेशियों में तनाव कम होता है और शरीर के जोड़ों की गतिशीलता में सुधार होता है /

2 ----संक्रमण को रोकते हैं ----------

आपके हाथ पांब दिन में बार बार जमीनी सतह के सम्पर्क में आने से गंदगी , धूल , मिटटी आदि से खराब हो जाते हैं जिसकी बजह से आपके नाख़ून गंदे हो जाते हैं और आपकी त्वचा अक्सर खराब हो जाती है /

नियमित मैनीक्योर और पेडिक्योर नाखुनो को साफ़ और सुबब्स्थित रखने में मदद करते हैं जिससे नाखूनों में फंगल और जीबाणु संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है /

नाखूनों के इर्द गिर्द मृत त्वचा कोशिकाओं को हटाने से और क्यूटिकल की उचित केयर से फंगल और अन्य प्रकार के संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है /

पैरों के नाखूनों को साफ रखने , छोटा रखने और नियमित रूप से काटने से आपके नाख़ून अन्दर की तरफ बढ़ते हैं जिससे हर तरह के संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है और हाथों को भी यही फायदा मिलता है /

हमारे नाखुनो में नियमित रूप से गंदगी जमा होती रहती है या कुछ न कुछ फंसा रहता है और उन्हें साफ और पोलिश रखने से काफी फायदे होते हैं / मैनीक्योर और पेडिक्योर में पौषक क्रीम और तेलों का प्रयोग किया जाता है जोकि इस क्षेत्र को मॉइस्चराइज़ करते हैं जिससे नाख़ून टूटते नहीं हैं और इनमे उबड़ खाबड़ धब्बे भी नहीं पड़ते /

3 ----तनाव को रोकते हैं ----------

मैनीक्योर और पेडिक्योर में मसाज के दौरान मांस पेशियाँ रिलैक्स होती हैं जिससे तनाव कम होता है / मसाज के प्रेशर और मूवमेंट से तनाव रिलीज़ हो जाता है और इससे सेहत और तंदरुस्ती को प्रमोट करने में मदद मिलती है /

मसाज आपकी हाथों और पैरों की नसों को शांत करती है जिससे तनाव को संतुलित किया जा सकता है / हाथों और पैरों को गर्म पानी में डुबोने से थकान पूरी तरह मिट जाती है जिससे शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाबा देने में मदद मिलती है /यह हाथों और पैरों की कठोर मांसपेशियों को शांत करके इनकी पीड़ा कम करता है और इन्हे लचीचा बनाता है /

4---नमी बनाये रखता है ----------

त्वचा की नमी बनाये रखना काफी चुनौतीपूर्ण काम होता है /

एक अच्छे मैनीक्योर और पेडिक्योर में गहन हाइड्रेशन प्रक्रिया अपनाई जाती है जिससे आपके शरीर की त्वचा की प्रकृतिक नमी और लचीलेपन को सुधारने में मदद मिलती है जिससे त्वचा को फटने से रोका जा सकता है और दाग , धब्बों आदि से मुक्ति मिल जाती है / तेल और क्रीम की मालिश से त्वचा की नमी बरकरार रहती है

5 ------नाख़ून और त्वचा को स्वास्थ्य को सुधारता है -----

मैनीक्योर और पेडिक्योर नाखूनों को गहराई से साफ़ करते हैं \

इस तकनीक से सारी गंदगी साफ हो जाती है / त्वचा को बीमार करने बाले हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और इनका नाखूनों के स्वास्थ्य पर सकारत्मक प्रभाव पड़ता है /

क्यूटिकल को ट्रिम करने से हैंगनेल (नाखूनों के आस पास की त्वचा) में होने बाली पीड़ा को रोका जा सकता है और नाखूनों को मजबूत और स्वास्थ्य बर्धक तरीके से बढ़ने का मार्ग परस्त हो जाता है /

नियमित मैनीक्योर और पेडिक्योर से त्वचा की नई कोशिकाओं का विकास होता है / इससे उचित एक्सफ़ोलिएशन सुनिश्चित होता है जिससे हमारे हाथों और पैरों की त्वचा की मृतक कोशिकाओं को हटाने में मदद मिलती है जोकि नाखूनों की सेहत के लिए काफी अहम होती है

लेखिका अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेष्ज्ञ है और हर्बल क्वीन के रूप में लोक प्रिय है /

लहसुन का दोषों पर क्या असर है

लहसुन से इम्यूनिटी बढ़ती है, कोलेस्ट्रॉल कम होता है, गैस ठीक होती है। लेकिन असली सवाल यह है कि आयुर्वेद के हिसाब से यह आपके दोषों पर क्या असर डालता है

अगर आपको वात है, पित्त है या कफ है – तो क्या तीनों ही कच्चा लहसुन खा सकते हैं या किसी एक दोष में यह नुकसान भी कर सकता है और अगर नुकसान की संभावना है तो क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे हम इसे बैलेंस करके फायदा ले सकें। इसी पूरे मुद्दे को आज हम विश्लेषण से दोषों के हिसाब समझेंगे।

लहसुन की तासीर कच्चे लहसुन की तासीर गर्म होती है। यह तीखा भी है और हल्का सा स्निग्ध यानी ऑयली नेचर भी रखता है। इसलिए इसका असर हर दोष पर अलग-अलग तरीके से पड़ता है। इसे तरीके से एक-एक करके समझते हैं।

1. वात दोष और कच्चा लहसुन वात दोष की प्रकृति ठंडी और रूखी होती है। जिन लोगों में वात ज्यादा होता है, उन्हें जोड़ों में दर्द, नसों में खिंचाव, गैस, अफारा, सूखापन, सुन्नपन जैसी समस्याएं ज्यादा होती हैं। लहसुन गर्म है और हल्का स्निग्ध भी है, यानी जो वात की ठंडक और रूखापन हैं, उन्हें यह काउंटर करता है। अगर आप वात प्रकृति के हैं और सुबह खाली पेट एक से दो कच्ची लहसुन की कलियां लेते हैं, तो यह आपके वात को संतुलित करने में मदद कर सकता है।

कौन-कौन से फायदे मिल सकते हैं

पहला – जोड़ों का दर्द और नसों का दर्द। अगर दर्द का कारण वात है, तो लहसुन उसमें काफी राहत दे सकता है।

दूसरा – गैस और अफारा। जिन लोगों को सुबह-सुबह पेट फूलने या गैस की समस्या रहती है, उनके लिए लहसुन काफी फायदेमंद हो सकता है।

तीसरा – नसों की कमजोरी। अगर झुनझुनी, सुन्नपन या नर्व वीकनेस महसूस होती है, तो कच्चा लहसुन धीरे-धीरे इन लक्षणों को कम करने में मदद करता है।

खाने का सही तरीका एक से दो कच्ची कलियां लें। उन्हें क्रश कर लें या बारीक काट लें। पांच मिनट खुली हवा में छोड़ दें। उसके बाद सादे या हल्के गुनगुने पानी के साथ निगल लें।

यह तरीका वात वालों के लिए सही है।

2. कफ दोष और कच्चा लहसुन अब बात कफ की। कफ भारी, ठंडा और चिपचिपा होता है। जिन लोगों में कफ ज्यादा होता है, उन्हें सुस्ती, वजन बढ़ना, बलगम, पुरानी खांसी, साइनस, ब्लॉकेज जैसी समस्याएं ज्यादा होती हैं। लहसुन तीखा और गर्म है। इसका तीखापन कफ को तोड़ता है और इसकी गर्मी कफ को पिघलाने का काम करती है, अगर आप कफ प्रकृति के हैं और सुबह खाली पेट कच्चा लहसुन लेते हैं, तो यह कफ को बैलेंस करने में बहुत मददगार हो सकता है।

फायदे क्या-क्या

पहला – मोटापा और जमा हुई चर्बी। लहसुन मेटाबॉलिज्म को एक्टिव करता है और सुस्ती कम करता है। इससे वजन कंट्रोल में लाने में मदद मिलती है।

दूसरा – सांस की समस्या। पुरानी खांसी, ज्यादा बलगम, साइनस – इन सब में लहसुन अच्छा सपोर्ट देता है।

तीसरा – कोलेस्ट्रॉल। अगर कफ धमनियों में जमा होकर ब्लॉकेज या कोलेस्ट्रॉल का रूप ले रहा है, तो लहसुन धमनियों को साफ करने और ब्लड फ्लो बेहतर करने में मदद करता है।

खाने का तरीका – एक से दो कलियां क्रश करें, पांच मिनट हवा में छोड़ें और गुनगुने पानी के साथ ले लें।

3. पित्त दोष और कच्चा लहसुन पित्त पहले से ही गर्म और तीखा होता है। जिन लोगों में पित्त ज्यादा होता है, उन्हें सीने में जलन, एसिडिटी, ज्यादा पसीना, चिड़चिड़ापन, स्किन रैशेज जैसी समस्याएं जल्दी होती हैं। अगर पित्त प्रकृति वाला व्यक्ति सीधे कच्चा लहसुन पानी के साथ खा ले, तो उसका पित्त बढ़ सकता है। उसे एसिडिटी, सीने में जलन, स्किन पर रिएक्शन या पुरानी जलन की समस्या और ज्यादा हो सकती है।

तो क्या पित्त वाले लहसुन बिल्कुल ना खाएं ऐसा नहीं है बस खाने का तरीका बदलना पड़ेगा।

सही तरीका पित्त वालों के लिए एक से दो लहसुन की कलियां बारीक कूट लें और एक चम्मच गाय का देसी घी लें। उस घी में लहसुन डालकर हल्का सा गर्म करें। बहुत ज्यादा नहीं भूनना है। बस इतना कि रंग थोड़ा बदल जाए, हल्का पिंक या सुनहरा हो जाए। फिर इसे आंच से हटाकर सामान्य तापमान पर लाएं और निगल लें। ऊपर से हल्का गुनगुना पानी पिएं।

ध्यान रखें – ठंडा पानी नहीं। ठंडा पानी पीने से घी गले में जम सकता है और दिक्कत दे सकता है, इसलिए सिर्फ हल्का गुनगुना पानी।

यह तरीका क्यों काम करता है घी पित्त को शांत करता है। घी की शीतल और स्निग्ध प्रकृति लहसुन की गर्मी को बैलेंस कर देती है। इस तरह पित्त बढ़े बिना आप लहसुन के फायदे ले सकते हैं।

निष्कर्ष

1. वात और कफ वालों के लिए कच्चा लहसुन सीधे गुनगुने पानी के साथ काफी फायदेमंद है।

2. पित्त वालों के लिए वही लहसुन अगर घी में हल्का प्रोसेस करके लिया जाए, तो सुरक्षित और उपयोगी हो सकता है।

यानी बात यह नहीं कि लहसुन अच्छा है या बुरा। असली बात यह है कि आपकी प्रकृति क्या है और आप उसे किस तरीके से ले रहे हैं। अगर सही दोष, सही मात्रा और सही तरीके का ध्यान रखा जाए, तो लहसुन एक बहुत ताकतवर औषधि की तरह काम कर सकता है।

औषधीय गुणों से भरपूर: ब्रह्मवृक्ष पलाश

पलाश, जिसकी समिधा यज्ञ में प्रयुक्त होती है, हिन्दू धर्म में पवित्र माने गये पलाश वृक्ष को आयुर्वेद ने 'ब्रह्मवृक्ष' नाम से गौरवान्विति किया है। पलाश के पाँचों अंग (पत्ते, फूल, फल, छाल, व मूल) औषधीय गुणों से सम्पन्न हैं। यह रसायन (वार्धक्य एवं रोगों को दूर रखने वाला), नेत्रज्योति बढ़ाने वाला व बुद्धिवर्धक भी हैं।

1. पलाश के पत्तों से बनी पत्तलों पर भोजन करने से चाँदी के पात्र में किये गये भोजन के समान लाभ प्राप्त होते हैं।

2. पलाश पुष्प मधुर व शीतल हैं। उनके उपयोग से पित्तजन्य रोग शांत हो जाते हैं।

3. पलाश के बीज उत्तम कृमिनाशक व कुष्ठ (त्वचारोग) दूर करने वाले हैं।

4. पलाश गोंद हड्डियों को मजबूत बनाता है।

5. पलाश जड़ अनेक नेत्ररोगों में लाभदायी हैं।

6. पलाश व बेल के सूखे पत्ते, गाय का घी व मिश्री समभाग मिलाकर धूप करने से बुद्धि शुद्ध होती है व बढ़ती भी हैं।

7. वसंत ऋतु में पलाश लाल फूलों से लद जाता हैं। इन फूलों को पानी में उबालकर केसरी रंग बनायें। यह रंग पानी में मिलाकर स्नान करने से आने वाली ग्रीष्म ऋतु की तपन से रक्षा होती है, कई प्रकार के चर्मरोग भी दूर होते हैं।

पलाश के फूलों द्वारा उपचार :

1. महिलाओं के मासिक धर्म में अथवा पेशाब में रूकावट हो तो फूलों को उबालकर पुल्टिस बना के पेड़ू पर बाँधें। अण्डकोषों की सूजन भी इस पुल्टिस से ठीक होती हैं।

2. प्रमेह (मूत्र-संबंधी विकारों) में पलाश के फूलों का काढ़ा (५० मि.ली.) मिलाकर पिलायें।

3. रतौंधी की प्रारम्भिक अवस्था में फूलों का रस आँखों में डालने से लाभ होता हैं।

4. आँख आने पर (Conjunctivitis) फूलों के रस में शुद्ध शहद मिलाकर आँखों में लगाए, फायदा मिलेगा।

अत्यधिक गर्मी में आलू के चिप्स का पैकेट क्यों फट सकता है — एक विस्तृत एवं प्रभावशाली व्याख्या

सामान्य घरेलू परिस्थितियों में आलू के चिप्स का पैकेट फटना अत्यंत दुर्लभ है, फिर भी अत्यधिक तापमान की स्थिति में ऐसा संभव है।

इस बात को समझने के लिए हमें यह जानना आवश्यक है कि चिप्स के पैकेट किस प्रकार बनाए जाते हैं और उच्च तापमान के संपर्क में आने पर उनके भीतर क्या भौतिक परिवर्तन होते हैं।

1. चिप्स के पैकेट में गैस क्यों भरी जाती है आलू के चिप्स अत्यंत हल्के और नाज़ुक होते हैं, जो परिवहन या भंडारण के दौरान आसानी से टूट सकते हैं। इसी कारण निर्माता पैकेट के भीतर एक निष्क्रिय (Inert) गैस — प्रायः नाइट्रोजन — भरते हैं। यह गैस कई महत्वपूर्ण कार्य करती है:

१. चिप्स को कुशन प्रदान करती है — जिससे वे टूटने से बचते हैं

२. ऑक्सीकरण को रोकती है — जिससे चिप्स की कुरकुराहट और स्वाद सुरक्षित रहता है

. शेल्फ लाइफ बढ़ाती है — उत्पाद अधिक समय तक ताज़ा रहता है

नाइट्रोजन रासायनिक रूप से स्थिर होती है और खाद्य पदार्थों के साथ प्रतिक्रिया नहीं करती, इसलिए यह पैकेजिंग के लिए आदर्श मानी जाती है।

2. फटने के पीछे का विज्ञानः गर्मी में गैस का प्रसार सामान्य परिस्थितियों में बंद पैकेट के भीतर का दबाव बाहरी वायुमंडलीय दबाव के लगभग संतुलन में होता है। लेकिन जब पैकेट अत्यधिक गर्मी — जैसे तेज धूप, गैस चूल्हे के पास, या गर्मियों में बंद कार के अंदर — के संपर्क में आता है, तब उसके भीतर की गैस के अणु अधिक सक्रिय हो जाते हैं।

यह बात गैसों के मूलभूत नियमों से समझी जा सकती है:

* तापमान बढ़ने पर गैस के अणु अधिक तीव्र गति से चलने लगते हैं।

* उनकी गति बढ़ने से पैकेट के भीतर दबाव भी बढ़ जाता है और यह दबाव पैकेट की सहनशीलता से अधिक हो जाए, तो पैकेट फट सकता है।

* यह प्रक्रिया गैस के ऊष्मीय प्रसार (Thermal Expansion) का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जो भौतिकी का एक मौलिक सिद्धांत है।

3. पैकेट कभी-कभी ही क्यों फटते हैं ? सामान्य घरेलू तापमान, चाहे रसोई थोड़ी गर्म ही क्यों न हो, इतना अधिक नहीं होता कि पैकेट के भीतर खतरनाक दबाव उत्पन्न कर सके। चिप्स के पैकेट एक निश्चित सीमा तक आंतरिक दबाव सहने के लिए बनाए जाते हैं। इसलिए:

1. दैनिक घरेलू परिस्थितियाँ सामान्यतः सुरक्षित होती हैं

2. नियमित उपयोग में फटने की संभावना अत्यंत कम होती है, केवल अत्यधिक और लंबे समय तक बनी गर्मी ही जोखिम बढ़ाती है

उदाहरणस्वरूप, यदि पैकेट को गर्म ओवन में छोड़ दिया जाए, सीधे आग के पास रखा जाए, या तेज धूप में बंद वाहन के अंदर रखा जाए, तो दबाव असामान्य रूप से बढ़ सकता है और अचानक फटने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

4. जब पैकेट फटता है तो वास्तव में क्या होता है जब आंतरिक दबाव पैकेट की सीमा से अधिक हो जाता है, तो पैकेट का सबसे कमजोर हिस्सा पहले टूटता है। इस दौरानः एक तेज़ फटने जैसी आवाज़ आती है। संपीड़ित गैस अचानक बाहर निकलती है। चिप्स चारों ओर बिखर सकते हैं।

यह दृश्य एक छोटे विस्फोट जैसा प्रतीत हो सकता है, किंतु वास्तव में यह केवल दबाव के अचानक मुक्त होने की प्रक्रिया है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि नाइट्रोजन ज्वलनशील नहीं होती। इसमें किसी प्रकार का दहन (Combustion) नहीं होता — केवल दबाव का तीव्र उत्सर्जन होता है।

5. आधुनिक पैकेजिंग और सुरक्षा में नवीन प्रगति हाल के वर्षों में खाद्य पैकेजिंग तकनीक में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं:

1. बहु-स्तरीय (Multi-layer) मजबूत फिल्म का उपयोग, जो अधिक दबाव सह सके

2. उन्नत सीलिंग तकनीक, जिससे पैकेट अधिक समान और सुरक्षित बनते हैं

3. बेहतर गुणवत्ता नियंत्रण, जिससे निर्माण संबंधी दोष कम होते हैं

निर्माता पैकेट इस प्रकार डिज़ाइन करते हैं कि वे परिवहन के दौरान ऊँचाई में बदलाव या तापमान के उतार-चढ़ाव को भी सह सकें।

6. व्यावहारिक सावधानियाँ पैकेट के फटने की संभावना को न्यूनतम करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ अपनाई जा सकती हैं:

1. पैकेट को गैस चूल्हे या ओवन जैसे तीव्र ऊष्मा स्रोतों के पास ना रखें

2. लंबे समय तक सीधे धूप में ना छोड़ें

3. ठंडी और सूखी जगह पर भंडारण करें

4. अत्यधिक तापमान परिवर्तन से बचाएँ

7. अंतिम निष्कर्षः यह दहन नहीं, भौतिक विज्ञान है अत्यधिक गर्मी में चिप्स के पैकेट का फटना किसी रासायनिक विस्फोट का परिणाम नहीं है, बल्कि गैस के प्रसार के कारण उत्पन्न यांत्रिक दबाव का परिणाम है। यह घटना सामान्य घरेलू परिस्थितियों में अत्यंत दुर्लभ है, फिर भी यह हमें भौतिकी के मूल सिद्धांतों — तापमान, दबाव और गैस के व्यवहार — की व्यावहारिक समझ प्रदान करती है।

इस प्रकार, एक साधारण से प्रतीत होने वाले पैकेट के माध्यम से हम ऊष्मागतिकी (Thermodynamics) के गहन सिद्धांतों को दैनिक जीवन में घटित होते हुए देख सकते हैं।

'नाग कन्या'

पिंकी कुंडू

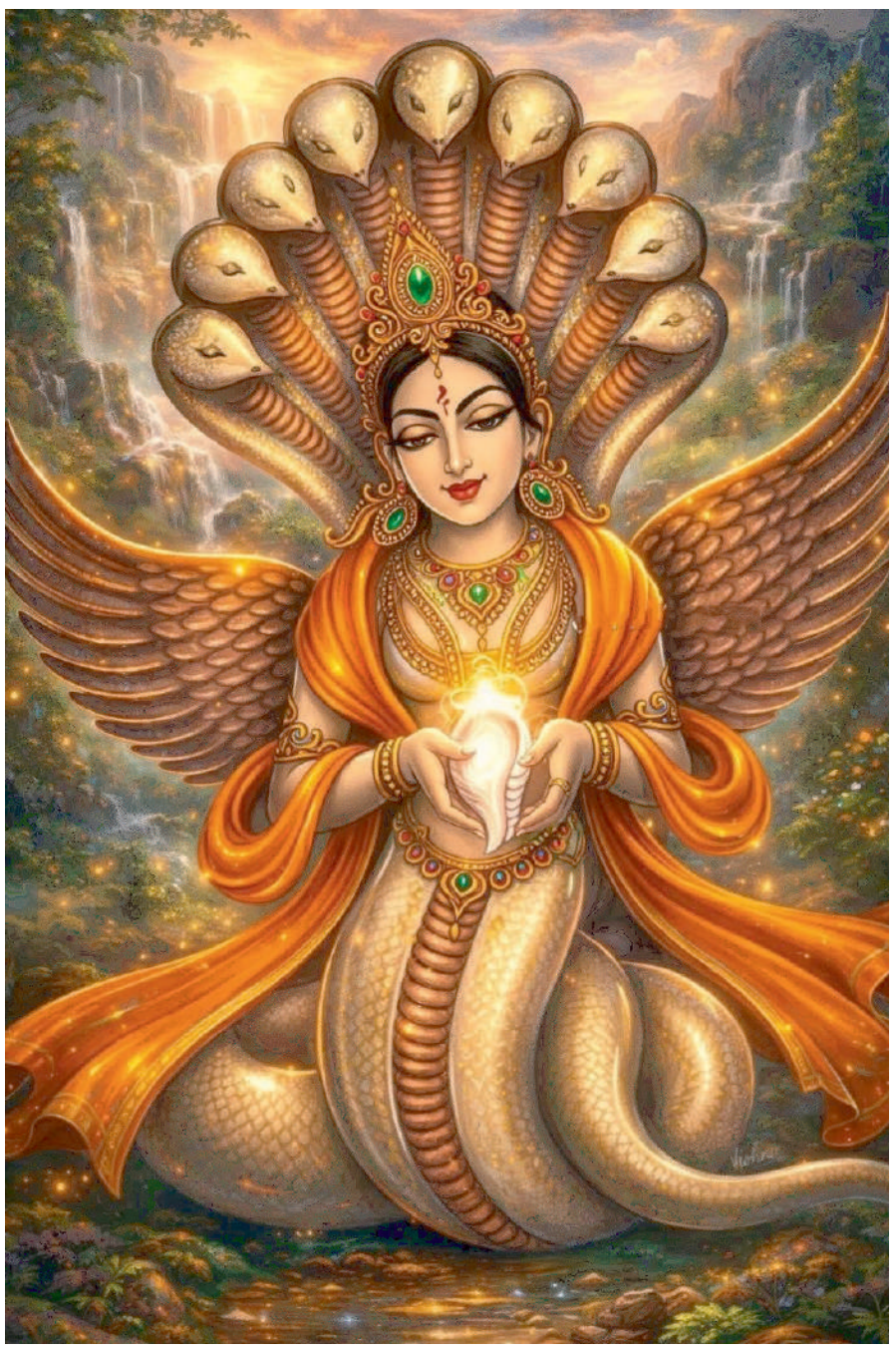

भारतीय पुराणों और लोकपरंपराओं में वर्णित 'नाग कन्या' दिव्य नागवंश की स्त्री शक्ति का रूप मानी जाती है। इन्हें जलतत्व, पाताल लोक और गुप्त खजानों की अधिष्ठात्री शक्ति के रूप में स्मरण किया जाता है।

किसका रूप मानी जाती हैं नाग कन्याएँ सामान्यतः नागराजों की पुत्रियाँ कही गई हैं, जैसे वासुकी, तक्षक और अनंत शेष के वंश से उत्पन्न दिव्य शक्तियाँ।

कई परंपराओं में इन्हें स्वयं आदिशक्ति का अंश, अपितु जल और कुंडलिनी ऊर्जा का सजीव स्वरूप भी माना गया है।

भगवान विष्णु शेषनाग पर विराजमान हैं, अतः नागवंश को वैष्णव परंपरा से भी जोड़ा जाता है।

पुराणों में उल्लेख नागों और नाग कन्याओं का उल्लेख अनेक ग्रंथों में मिलता है —

महाभारत में नागलोक, तक्षक और नागवंश की कथाएँ विस्तार से वर्णित हैं।

भागवत पुराण में कालिया नाग और नागों की उत्पत्ति का उल्लेख मिलता है।

विष्णु पुराण तथा स्कन्द पुराण में भी नागों की उत्पत्ति, शक्ति और वंश पर चर्चा है।

एक प्रचलित श्लोक है —

नागानां पतये तुभ्यं नमः शेषाय धीमहि।
सर्परूपे महाशक्ते पालयस्व मम सर्वदा॥

क्या इनकी साधना की जा सकती है

हाँ, नाग शक्ति की उपासना की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है।

विशेषकर नाग पंचमी, श्रावण मास और वर्षा ऋतु में नाग देवता और नाग कन्या की पूजा की जाती है।

साधना सामान्यतः शुद्धता, अहिंसा और जलतत्व के सम्मान के साथ की जाती है।

कुंडलिनी साधना में नाग रूप प्रतीकात्मक है, जहाँ सर्पाकार ऊर्जा मूलाधार से सहस्रार तक जागृत होती है।

इसलिए नाग कन्या की आराधना आंतरिक शक्ति जागरण का भी संकेत मानी जाती है।

साधना के लाभ।। नाग कन्या की कृपा से जीवन में धन और समृद्धि की वृद्धि, वर्षा और कृषि में अनुकूलता, दाम्पत्य और प्रेम में मधुरता, आध्यात्मिक उन्नति, भय से मुक्ति तथा अदृश्य बाधाओं से संरक्षण प्राप्त होता है।

ऐसा विश्वास है कि जहाँ विनम्रता, स्वच्छता और श्रद्धा होती है, वहाँ यह दिव्य शक्ति स्वयं उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान करती है।

नाग कन्या केवल एक मिथकीय पात्र नहीं, अपितु प्रकृति की उस रहस्यमयी चेतना का प्रतीक है जो जल, धरती और जीवन के संतुलन को बनाए रखती है।

भगवान शिव के 5 प्रमुख

पिंकी कुंडू

नंदीः शिवजी के वाहन, प्रमुख गण और द्वारपाल।

भृंगीः वे गण जो केवल शिव की परिक्रमा करते थे, यह शिवभक्ति के लिए समर्पित हैं।

वीरभद्रः शिव की जटा से उत्पन्न महाकाली के साथ वे अत्यंत बहादुर गण हैं।

महाकाल (भैरव) : काल भैरव को शिव का एक प्रमुख गण और रूप माना जाता है।

कीर्तिमुख : शिव के मुख्य पार्षद और भक्तों में से एक।

भगवान शिव का पंचमुखी स्वरूप पांच तत्व रूप

पिंकी कुंडू

1. ईशान (ऊर्ध्व मुख) : यह सर्वोच्च मुख है जो आकाश तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। यह ज्ञान और ईश्वरत्व का प्रतीक है।

2. तत्पुरुष (पूर्व मुख) : यह वायु तत्व से संबंधित है। यह आत्मा में स्थित रहने और अहंकार के नाश का प्रतीक है।

3. अघोर (दक्षिण मुख) : यह अग्नि तत्व का प्रतीक है, जो विकारों को शुद्ध करता है।

4. वामदेव (उत्तर मुख) : यह जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है और ज्ञान व पालन का प्रतीक है।

5. सद्योजात (पश्चिम मुख) : यह पृथ्वी तत्व से संबंधित है और बालक के समान शुद्धता व सृजन का प्रतीक है।

पिंकी कुंडू

ॐ ह्रीं वराही उग्ररूपिणि स्वाहा।
भूतप्रेतपिशाचादि दुष्टग्रह विनाशिनि॥
डाकिनी शाकिनी चण्डे मोहिनी मारिणि शक्ते।
मम सर्वभयं छिन्धि छिन्धि, शत्रून् भस्मी कुरु कुरु॥
कपालिनी खड्गधारिणि रक्तदंष्ट्रे भयङ्करि।
अन्धकारे दीपवत् रक्ष मां सर्वतः सदा॥
हूं हूं फट्
भूतान् दह दह।
पिशाचान् छेद छेद।
डाकिनी शाकिनी बन्ध बन्ध।
दुष्टग्रहान् नाशय नाशय॥
जय वराहि महाशक्ते
सर्वतन्त्रस्वरूपिणि।
मम गृहे शान्तिं कुरु
मम चित्ते बलं देहि

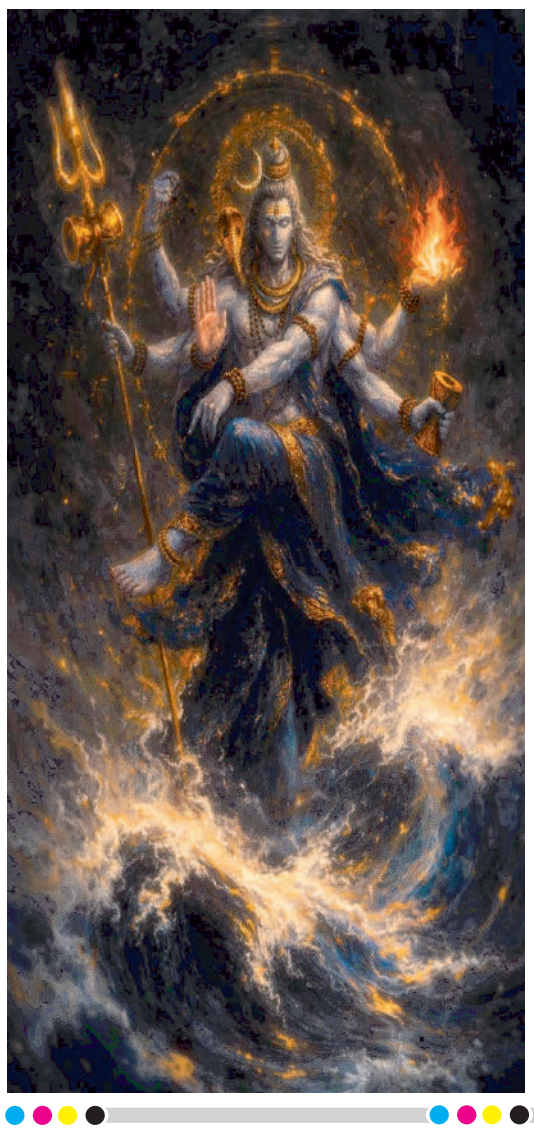

भगवान सूर्य का जन्म कैसे हुआ? जानिए देवमाता अदिति से जुड़ी यह अद्भुत पौराणिक कथा!

पिंकी कुंडू

क्या आपने कभी सोचा है कि संपूर्ण ब्रह्मांड को ऊर्जा देने वाले भगवान सूर्यदेव ने माता के गर्भ से कैसे जन्म लिया और उनका नाम 'आदित्य' कैसे पड़ा? आइए जानते हैं.

देवताओं पर दैत्यों का संकट एक समय ऐसा था जब दैत्यों और देवताओं के बीच वर्षों तक भयानक युद्ध चला। देवता पराजित हो गए और सृष्टि का अस्तित्व संकट में पड़ गया। हताश देवगण जब देवर्षि नारद और कश्यप मुनि के पास पहुँचे, तो नारद जी ने बताया कि इस संकट से केवल सूर्य के समान तेजस्वी सत्ता ही मुक्ति दिला सकती है। लेकिन इसके लिए सूर्यदेव को मनुष्य रूप में जन्म लेकर देवसेना का नेतृत्व करना होगा!

देवमाता अदिति का कठोर तप सूर्य जैसे महाविराट अग्निपिंड को जन्म देने का सामर्थ्य केवल एक अत्यंत तेजस्वी स्त्री में ही हो सकता था। इसके लिए महर्षि कश्यप की पत्नी 'देवमाता अदिति' को चुना गया। माता अदिति के कठोर तप, त्याग और ध्यान से प्रसन्न होकर भगवान सूर्य ने उन्हें पुत्र रूप में जन्म लेने का वरदान दिया।

'आदित्य' का प्राकट्य और दैत्यों का अंत समय आने पर माता अदिति के गर्भ से एक दिव्य तेज वाले बालक का जन्म हुआ। अदिति के पुत्र होने के कारण ही सूर्यदेव का नाम 'आदित्य' पड़ा!

आदित्य के प्रचंड तेज और बल के सामने दैत्य अधिक देर तक टिक नहीं पाए और प्राण बचाकर पाताल लोक भाग गए। स्वर्ग पर पुनः देवताओं का अधिकार हो गया।

जगत के पालक और ग्रहराज सभी देवताओं ने आदित्य को जगत के पालक और 'ग्रहराज' के रूप में स्वीकार किया। सृष्टि को दैत्यों के अत्याचारों से मुक्त कर भगवान आदित्य ब्रह्मांड के मध्य में स्थित हुए और वहीं से पूरे संसार का संचालन करने लगे।

यह कथा हमें सिखाती है कि घोर अंधकार और संकट के बाद भी एक तेजस्वी सवेरा अवश्य आता है। इसे अपने मित्रों और परिवार के साथ जरूर साझा करें!

।। भुवन भास्कराय नमः ।।

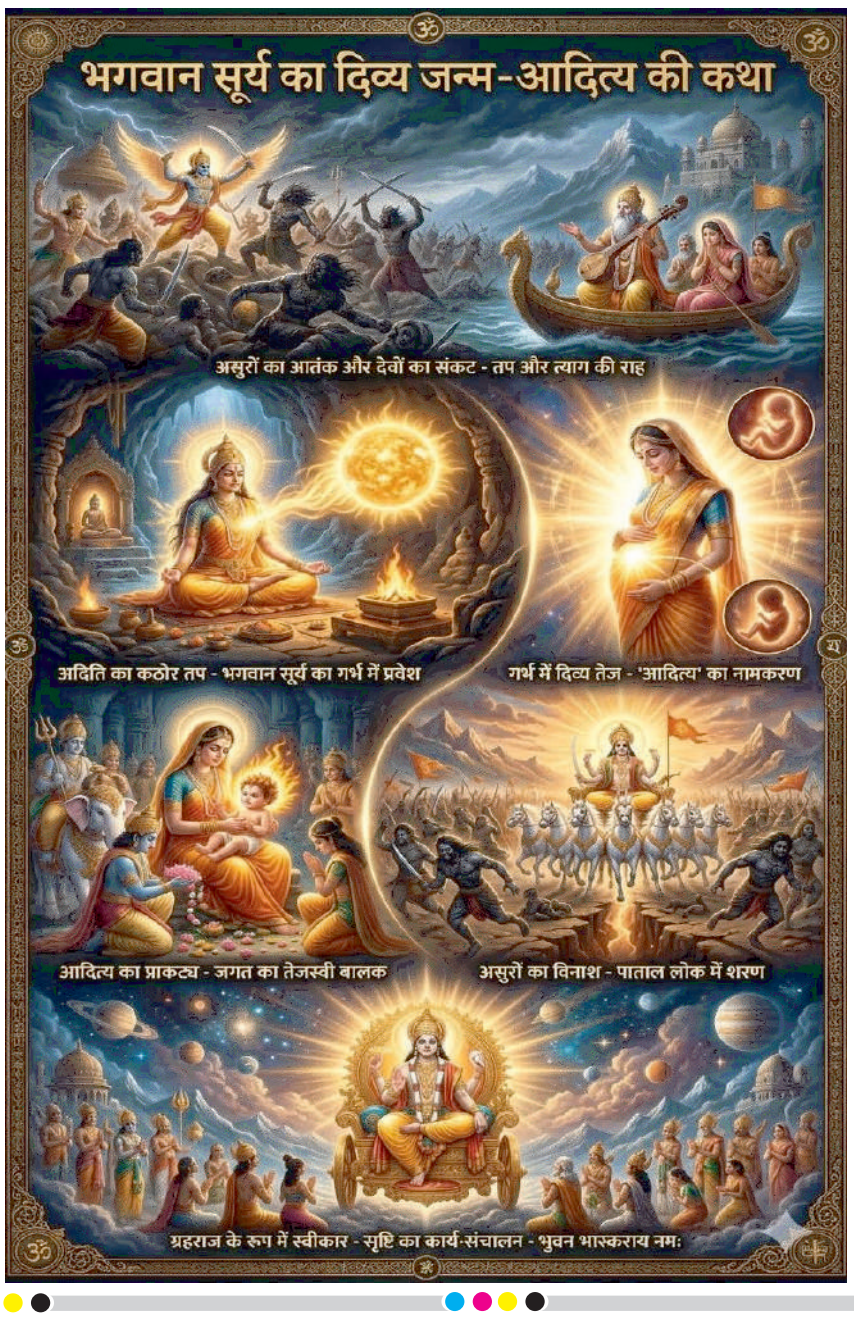

शिव बिना शक्ति अधूरे हैं और शक्ति बिना शिव अपूर्ण

पिंकी कुंडू

गुलाबी दिव्य वस्त्रों में खड़े बाबा शिव और मां पार्वती का यह अलौकिक स्वरूप भक्तों के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का आशीर्वाद लेकर आता है। मंदिर की घंटियाँ, बहता जलप्रपात, खिले हुए कमल और दिव्य प्रकाश — यह दृश्य केवल एक चित्र नहीं, बल्कि आस्था की अनुभूति है। जो सच्चे मन से महादेव का नाम लेता है, उसके जीवन की हर कठिनाई सरल हो जाती है।

हर हर महादेव

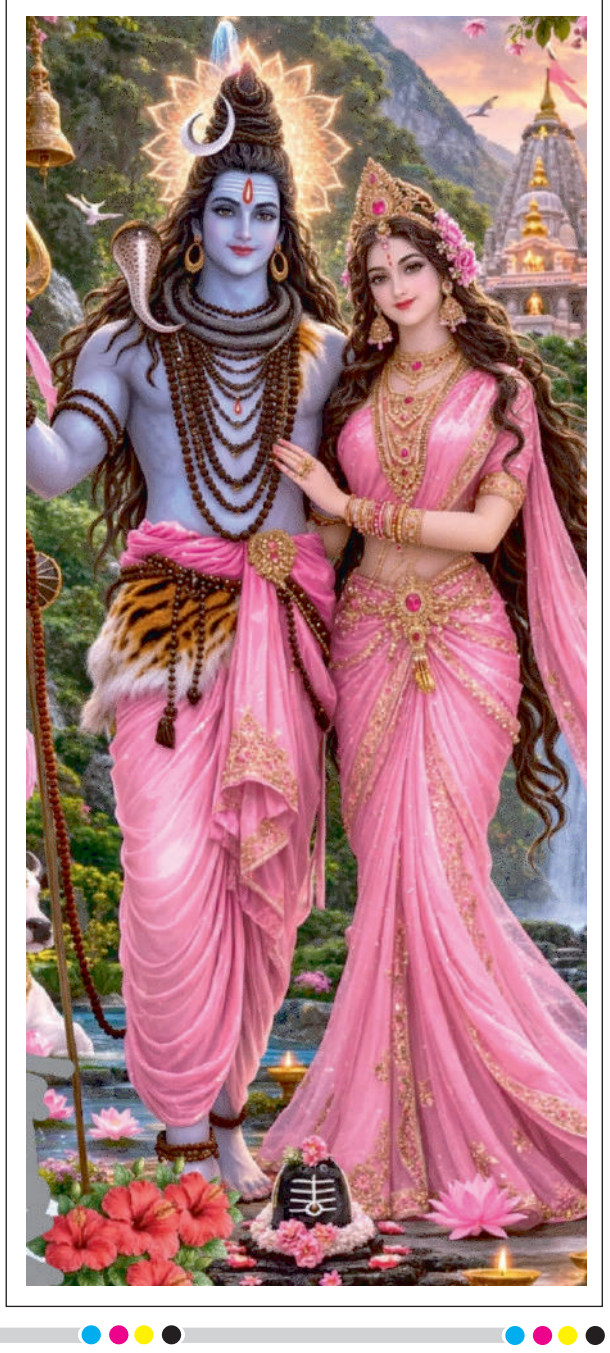

बार काउंसिल चुनाव के मद्देनजर प्रशासन ने तैयारियां तेज, एडीसी को बनाया नोडल अधिकारी

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बार कौंसिल चुनाव को लेकर अधिकारियों की बैठक में दिए जरूरी निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

बार कौंसिल चुनाव को लेकर झज्जर में 2 और बहादुरगढ़ में एक मतदान केंद्र पर डलेगे वोट

झज्जर, 5 मार्च। पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के चुनाव के मद्देनजर उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में बृहस्पतिवार को अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में चुनाव प्रक्रिया को सुचारू, शांतिपूर्ण और पारदर्शी ढंग से सम्पन्न करवाने के लिए विभिन्न विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास को चुनाव संबंधी व्यवस्थाओं के समन्वय के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि बैठक में बार काउंसिल ऑफ पंजाब एवं हरियाणा के चुनाव 18 मार्च को आयोजित किए जाएंगे। चुनाव के लिए जिला न्यायालय परिसर झज्जर में 2 तथा बहादुरगढ़ न्यायालय परिसर में 1 सहित कुल 3 मतदान केन्द्र स्थापित बनाए गए हैं।

उपायुक्त ने पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि मतदान केन्द्रों, बैलेट बॉक्स और चुनाव सामग्री की सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया जाए। साथ ही 16 मार्च को चुनाव सामग्री चंडीगढ़ से लाने तथा मतदान के बाद 18 मार्च को सील्ड बैलेट बॉक्स पुनः चंडीगढ़ में जमा करवाने के दौरान भी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

उन्होंने निर्देश दिए कि चुनाव के दिन जिला न्यायालय परिसर झज्जर तथा बहादुरगढ़ न्यायालय परिसर में साफ-सफाई और मूवेबल टॉयलेट की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम को चुनाव के दिन दोनों परिसरों में निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

लोक निर्माण विभाग (भवन एवं सड़क) को निर्देश दिए गए कि मतदान से एक दिन पूर्व दोनों न्यायालय परिसरों में आवश्यकतानुसार बैरिकेडिंग की व्यवस्था की जाए। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को मतदान के दिन दोनों स्थानों पर पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कहा गया।

उन्होंने सिविल सर्जन को निर्देश दिए गए कि मतदान के दौरान झज्जर जिला न्यायालय व बहादुरगढ़ न्यायालय परिसर में मेडिकल किट, एम्बुलेंस सहित स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध रहें।

बैठक में उपायुक्त ने बार एसोसिएशन झज्जर एवं बहादुरगढ़ के अध्यक्षों से भी चुनाव प्रक्रिया के दौरान जिला प्रशासन को पूर्ण सहयोग देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए चुनाव को शांतिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करवाना सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम बादली डॉ रमन गुप्ता, एसीपी दिनेश कुमार, तहसीलदार शेखर, लोक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता सुमित कुमार, जनस्वास्थ्य विभाग से एक्सईएन अश्वनी सांगवान, नायब तहसीलदार निर्वाचन कुलदीप सिंह, कानूनगो मनोज कुमार सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

समाधान शिविरों में मिली शिकायतों का प्राथमिकता से करें निस्तारण - डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

जिला प्रशासन द्वारा समाधान शिविरों के माध्यम से आमजन की समस्याओं का किया जा रहा त्वरित समाधान

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिला स्तरीय समाधान शिविर में सुनी जनसमस्याएं

झज्जर, 5 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि समाधान शिविरों में प्राप्त होने वाली प्रत्येक शिकायत का समयबद्ध, पारदर्शी एवं संतोषजनक निपटारा सुनिश्चित किया जाए, ताकि आमजन को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का उद्देश्य नागरिकों को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान उपलब्ध कराना है, जिससे सुशासन की अवधारणा को और अधिक मजबूती मिले। डीसी ने कहा कि यह सरकार की अनूठी पहल है जिसके तहत नागरिकों को एक छत की नीचे अपनी समस्याओं का समाधान मिलता है।

उपायुक्त गुरुवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित जिला स्तरीय समाधान शिविर में नागरिकों की समस्याओं की सुनवाई कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने प्राप्त शिकायतों का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर आवश्यक कार्रवाई कर शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए। समाधान शिविर में पांच शिकायतें दर्ज की गई।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक सोमवार और वीरवार को प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक जिला मुख्यालय के साथ-साथ बहादुरगढ़, बेरी और बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से प्रशासन आमजन की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ कार्य करते हुए उन्हें राहत प्रदान कर रहा है।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिकों से संवाद भी अवश्य स्थापित करें तथा उन्हें विभाग द्वारा की जा रही कार्रवाई की जानकारी दें। इससे न केवल कार्यप्रणाली में पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि शिकायतों का स्थायी समाधान भी सुनिश्चित होगा और नागरिकों का प्रशासन पर विश्वास भी मजबूत होगा।

इस अवसर पर अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास, एसडीएम अंकित कुमार चौकसे, एसीपी सुरेंद्र कुमार, जिला राजस्व अधिकारी मनवीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, जनस्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन अश्वनी सांगवान सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

गांव नूना माजरा ,सराय औरंगाबाद और आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में अवैध वेस्ट प्लास्टिक भंडारण पर प्रशासन की सख्ती

एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस ने मौके पर पहुंचकर दिए तुरंत बंद करने के निर्देश

बहादुरगढ़ 05 मार्च। एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस ने गुरुवार को गांव नूना माजरा का अधिकारियों के साथ दौरा कर क्षेत्र में अवैध रूप से बनाए गए वेस्ट प्लास्टिक भंडारण स्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने मौके पर ही वेस्ट प्लास्टिक भंडारण के कार्य को तुरंत प्रभाव से बंद करने के कड़े निर्देश दिए।

एसडीएम ने ग्राम सरपंच की मौजूदगी में गांव नूना माजरा क्षेत्र में बनाए गए वेस्ट प्लास्टिक भंडारण स्थलों को लेकर संबंधित व्यक्तियों को पंचायती राज अधिनियम के तहत कड़ी हिदायत जारी की। उन्होंने सख्त निर्देश देते हुए कहा कि निर्धारित समय सीमा के भीतर इन स्थलों से वेस्ट प्लास्टिक को हटाया जाए और भविष्य में इस प्रकार का भंडारण पूरी तरह बंद किया जाए, ताकि क्षेत्र का पर्यावरण स्वच्छ और सुरक्षित बना रहे। उन्होंने कहा कि अवैध रूप से प्लास्टिक कचरे का भंडारण न केवल पर्यावरण के लिए हानिकारक है, बल्कि इससे आसपास के क्षेत्र में प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं। प्रशासन ऐसे मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेगा।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों से आह्वान करते हुए कहा कि सभी ग्राम सरपंच यह सुनिश्चित करें कि उनके गांव में किसी भी भूमि पर अवैध रूप से वेस्ट प्लास्टिक का भंडारण न किया जाए।

उन्होंने सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि भविष्य में यदि कहीं भी वेस्ट प्लास्टिक का अवैध भंडारण पाया गया तो संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ नियमानुसार कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता को लेकर पूरी तरह गंभीर है और इस दिशा में निरंतर निगरानी रखी जाएगी। इस मौके पर बीडीपीओ सुरेंद्र खत्री, सरपंच राकेश राठी सराय औरंगाबाद और सरपंच मास्टर जय भगवान नूना माजरा मौजूद रहे।

फसल अवशेष जलाने पर दो माह तक प्रतिबंध - उपायुक्त

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत आदेश जारी, उल्लंघन पर होगी कार्रवाई

झज्जर, 5 मार्च। उपायुक्त एवं जिला मजिस्ट्रेट स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कटाई के बाद खेतों में फसल अवशेष जलाने पर प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए हैं। यह आदेश भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत जारी किया गया है और जिले की राजस्व सीमा में तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

जारी आदेशों में कहा गया है कि गेहूं व सरसों की फसल की कटाई के बाद खेतों में फसल अवशेष जलाने से अनियंत्रण आग लगने की संभावना बढ़ जाती है, जिससे वन्य जीव की हानि होने के साथ-साथ कानून एवं व्यवस्था की स्थिति भी प्रभावित हो सकती है। फसल अवशेष जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है और लोगों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

आदेश में यह भी उल्लेख किया गया है कि किसान अक्सर कंबाइन मशीन से फसल निकालने या हाथ से कटाई के बाद खेतों में बचे अवशेषों को आग लगाकर नष्ट कर देते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता को नुकसान पहुंचता है। फसल अवशेष जलाने से मिट्टी में मौजूद कार्बन तत्व, सूक्ष्म पोषक तत्व तथा लाभकारी जीवाणु नष्ट हो जाते हैं, जिससे भूमि की उत्पादकता और किसानों की आय दोनों प्रभावित होती हैं। इसके अलावा फसल अवशेष जलाने से निकलने वाला धुआं वातावरण को प्रदूषित करता है और लोगों में खांसी, सांस लेने में तकलीफ, अस्थमा व ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। साथ ही इससे वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा भी कम होती है और पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है।

पोस्ट-बजट वेबिनार में कृषि एवं ग्रामीण रूपांतरण विषय पर आज होगा मंथन

एआई आधारित डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, एग्रो-फॉरेस्ट्री को बढ़ावा देना वेबिनार का उद्देश्य

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 5 मार्च। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "कृषि एवं ग्रामीण रूपान्तरण" विषय पर शुक्रवार 6 मार्च को प्रातः 10 बजे से वर्चुअल माध्यम से पोस्ट-बजट वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वेबिनार के उद्घाटन सत्र को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी संबोधित करेंगे। सरकारी प्रवक्ता ने यह जानकारी दी।

प्रवक्ता ने बताया कि यह वेबिनार केंद्रीय बजट में कृषि क्षेत्र से संबंधित घोषित विभिन्न पहलों के प्रभावी क्रियान्वयन के रोडमैप पर विचार-विमर्श करने की परामर्शात्मक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके पश्चात विभिन्न विषयगत सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें कृषि के लिए एआई आधारित डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, एग्रो-फॉरेस्ट्री को बढ़ावा, बागवानी विकास तथा कृषि और ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण पहलें शामिल होंगी।

प्रवक्ता ने आगे बताया कि इस वेबिनार के कुल आठ सत्र आयोजित किए जाएंगे। पहला सत्र कृषि क्षेत्र के समग्र परिदृश्य पर केंद्रित होगा, जबकि अन्य सत्र कृषि क्षेत्र के विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित विषयों पर आधारित होंगे।

उन्होंने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री का संबोधन प्रातः 10 बजे से सभी सत्रों के लिंक पर लाइव प्रसारित किया जाएगा, इसलिए प्रतिभागी प्रधानमंत्री के संबोधन को देखने के लिए उपलब्ध किसी भी लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं।

सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि इच्छुक प्रतिभागी निम्नलिखित यूट्यूब लिंक https://youtube.com/@agrigoi

https://youtube.com/@pmkisanofficial

https://youtube.com/@manageindia

https://youtube.com/@niam7959

https://youtube.com/@nafedinindia

https://youtube.com/live/ZQXcE9QArYg

https://www.youtube.com/live/dBFQLVVDjs4

https://youtube.com/live/nGD86bGgk8A के माध्यम से वेबिनार से जुड़ सकते हैं।

57 हजार 992 किसानों की बनी फार्मर आईडी - उपायुक्त

पीएम किसान सम्मान निधि के लिए फार्मर आईडी अनिवार्य

जिला के सभी किसान बनवाएं फार्मर आईडी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 5 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने डिजिटल एग्री स्टैक के तहत फार्मर आईडी बनाने के कार्य की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस महत्वाकांक्षी अभियान को प्राथमिकता के आधार पर तेजी से पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना सहित विभिन्न कृषि योजनाओं का लाभ फार्मर आईडी के माध्यम से ही दिया जाएगा, इसलिए कोई भी पात्र किसान इस प्रक्रिया से वंचित न रहे।

उपायुक्त ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा डिजिटल एग्री स्टैक अभियान को मिशन मोड में लागू किया गया है और सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस महत्वपूर्ण कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और निर्धारित समय सीमा के भीतर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करना सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक किसान की फार्मर आईडी भविष्य में कृषि क्षेत्र की एक मजबूत डिजिटल पहचान बनेगी। इसी आईडी के आधार पर किसानों को सब्सिडी, सरकारी योजनाओं, अनुदानों, फसल बीमा, ऋण सुविधाओं सहित विभिन्न सेवाओं का लाभ पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से मिल सकेगा। बिना फार्मर आईडी के किसानों को इन योजनाओं के लाभ प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है, इसलिए अधिकारी सुनिश्चित करें कि कोई भी पात्र किसान छूटने न पाए।

उपायुक्त पाटिल ने बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में केंद्र सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके तहत पात्र किसानों को प्रतिवर्ष छह हजार रुपये की वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खातों में प्रदान की जाती है। उन्होंने कहा कि फार्मर आईडी बनने से लाभार्थियों की पहचान अधिक सटीक होगी और योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता भी बढ़ेगी।

उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि जिले में अब तक कुल 55 हजार 992 किसानों की डिजिटल एग्री स्टैक फार्मर आईडी तैयार की जा चुकी है। ब्लॉकवार बादली में छह हजार 630, बहादुरगढ़ में 11 हजार 166, बेरी में दस हजार 402, झज्जर में 13 हजार 608, मातनहेल में नौ हजार 789 तथा सालावास में चार हजार 397 किसानों की आईडी बनाई जा चुकी है।

उपायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गांव-गांव विशेष शिविर आयोजित कर किसानों को फार्मर आईडी के महत्व के बारे में जागरूक किया जाए तथा मौके पर ही उनकी आईडी तैयार की जाए। साथ ही उन्होंने कहा कि तकनीकी अथवा दस्तावेज संबंधी किसी भी समस्या का तुरंत समाधान किया जाए, ताकि अभियान की गति प्रभावित न हो और अधिक से अधिक किसानों को योजनाओं का लाभ समय पर मिल सके।

बेरी में बिजली उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक आज

बेरी (झज्जर), 05 मार्च। बिजली निगम डिवीजन बेरी के उपभोक्ताओं की बिजली से संबंधित शिकायतों के निवारण के लिए 06 मार्च, शुक्रवार को बिजली अदालत और उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक की आयोजित की जाएगी। एसडीओ सुनील कुमार ने बताया कि बैठक उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएनएल) के बेरी कार्यालय में सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि बैठक में बिजली उपभोक्ताओं की बिजली बिल, कनेक्शन, लोड संबंधित समस्याओं को सुना जाएगा और उनका मौके पर ही समाधान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कोई उपभोक्ता फैसले से संतुष्ट नहीं है तो वह अपनी शिकायत अध्यक्ष अभियंता झज्जर के समक्ष रख सकता है।

लर्निंग लॉडर द्वारा हुआ दिल्ली में 'रंग मंच' का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) लर्निंग लॉडर ने 1 मार्च को वसंत विहार, दिल्ली स्थित यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया ऑडिटोरियम में अपने विशेष कार्यक्रम ₹रंग मंच₹ का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की उपलब्धियों और प्रतिभाओं का उत्सव मनाया गया, जिसमें अभिभावक, शिक्षक और शुभचिंतक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसे उन परिवारों ने संपन्न किया जो लर्निंग लेडर से उसके प्रारंभिक वर्षों से जुड़े हुए हैं। दीप प्रज्वलन आशा, सकारात्मकता और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक था। लर्निंग लैडर के बच्चों के समर्पित परिवारों ने विशेष शिक्षा के माध्यम से बच्चों को सशक्त बनाने के मिशन में निरंतर सहयोग दिया है।

संस्थापक डॉ विकास राय ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया और समावेशी शिक्षा तथा चिकित्सीय हस्तक्षेप के महत्व पर जोर दिया, जो बच्चों को उनकी पूर्ण क्षमता तक पहुँचने में सहायक है।

कार्यक्रम में रंगारंग नृत्य और संगीत प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं। प्रत्येक प्रस्तुति ने बच्चों, उनके थेरेपिस्ट और विशेष शिक्षकों के बीच उत्कृष्ट समन्वय को दर्शाया, जो कई महीनों की मेहनत और अभ्यास का परिणाम था। अभिभावक अपने बच्चों को मंच पर आत्मविश्वास के साथ प्रदर्शन करते देख भावुक और गौरवान्वित हुए।

कार्यक्रम का समापन पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण, धन्यवाद ज्ञापन तथा रात्रि भोज के साथ हुआ। इस प्रेरणादायक संध्या ने सभी को बच्चों के आत्मविश्वास, एकता और उल्लेखनीय प्रगति से प्रभावित किया। लर्निंग लेडर ने सभी अभिभावकों और शुभचिंतकों के निरंतर सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया।

ग्रामीण विकास मंत्रालय शुरू करेगा "VB-G RAM G यूथ डिजिटल कैंपेन", युवाओं को गांवों के विकास से जोड़ने की पहल

संगिनी घोष

केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय, MY Bharat के सहयोग से "VB-G RAM G यूथ डिजिटल कैंपेन" नामक एक राष्ट्रव्यापी डिजिटल अभियान शुरू करने जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य युवाओं को डिजिटल माध्यमों के जरिए ग्रामीण विकास से जोड़ना है।

इस अभियान के अंतर्गत क्विज़, वीडियो चैलेंज और रचनात्मक प्रतियोगिताओं जैसी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इन गतिविधियों के माध्यम से देशभर के युवाओं को अपने गांवों के विकास, रोजगार सृजन और आजीविका संवर्धन से जुड़े विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा।

इस प्रतियोगिता में 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग के युवा भाग ले सकेंगे। प्रतिभागियों को अपने गांव के विकास से जुड़े विषय पर 30 से 60 सेकंड का वीडियो तैयार करना होगा।

यह वीडियो किसी भी भारतीय भाषा में बनाकर MY Bharat पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन जमा किया जा सकेगा, जिससे देश के विभिन्न क्षेत्रों के युवा इसमें आसानी से भाग ले सकेंगे।

ऐसे देखे तो यह अभियान "युवा शक्ति, पंचायत की प्रगति" की भावना को आगे बढ़ाने का एक प्रयास है, जिससे ग्रामीण भारत के विकास में युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

मुख्य बिंदु

* ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा VB-G RAM G यूथ डिजिटल कैंपेन की शुरुआत
* MY Bharat के सहयोग से आयोजित अभियान
* 15–29 वर्ष आयु वर्ग के युवा ले सकेंगे भाग
* गतिविधियों में क्विज़, वीडियो चैलेंज और रचनात्मक प्रतियोगिताएं शामिल
* प्रतिभागियों को 30–60 सेकंड का वीडियो बनाना होगा
* वीडियो MY Bharat पोर्टल पर ऑनलाइन जमा किया जा सकेगा

SEO Meta Description:

ग्रामीण विकास मंत्रालय और MY Bharat द्वारा शुरू किया जा रहा VB-G RAM G यूथ डिजिटल कैंपेन युवाओं को डिजिटल गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण विकास में भागीदारी के लिए प्रेरित करेगा।

वृन्दावन के कई प्रमुख समाजसेवी संगठनों ने किया वेदांत उपदेशक महामंडलेश्वर स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती महाराज का सम्मान

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रतन छतरी-कालीदह रोड़ स्थित गीता विज्ञान कुटीर में वेदांत उपदेशक, श्रीमद्भगवद गीता को प्रकांड विद्वान, वयोवृद्ध व प्रख्यात संत गीता विज्ञान पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती महाराज (हरिद्वार) अपनी धार्मिक यात्रा पर इन दिनों श्रीधाम वृन्दावन आए हुए हैं।उन्होंने यहां के कई प्रख्यात संतों, धर्माचार्यों व प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात कर धर्म- अध्यात्म व अन्य विषयों पर विचार-मंथन किया।

गीता विज्ञान पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि निष्कामता परमार्थ के सभी साधनों की जननी है।अतः हम सभी को अपने कार्य निष्काम भाव से करने चाहिए।साथ ही जगत से समता व परमात्मा से ममता रखनी चाहिए।संसार व शरीर को अपना मानना सभी पापों का मूल है।अतः संसार के सभी प्राणियों की सेवा, ईश्वर से प्रेम तथा स्वयं को त्याग करना चाहिए।साथ ही हम सभी को संयम, सेवा, सुमिरन और सादगी का पंचामृत सदैव पान करते रहना चाहिए।

पूज्य महाराजश्री ने कहा कि श्रीधाम वृंदावन अत्यंत पावन पुनीत योगयोगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण और उनकी शक्ति स्वरूपा श्रीराधा रानी की दिव्य लीला भूमि है। इस भूमि पर जो भी भक्त कपट, छल, निंदा, द्वेष व हीन भावना से रहित होकर सात्विक विधि से भजन, भोजन, निवास एवं सद्कर्म करता है, उसे निश्चित ही प्रियातम की प्राप्ति होती है।क्योंकि ठाकुरजी स्वामी कहते हैं - ₹ निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।ष"

सत्संग कार्यक्रम में महाराजश्री की पत्रिका "गीता लोक" के नवीन अंक का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रज सेवा संस्थान, ब्रजभूमि कल्याण परिषद्, मुक्तानंद चित्र वीथि, ब्रज जन सेवा समिति एवं मां सीता रसोई के द्वारा महामंडलेश्वर स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती महाराज को ठाकुरजी का प्रसादी पटुका ओढ़ाकर सम्मानित किया।साथ ही अंगवस्त्र और सत्साहित्य भेंट किया। ब्रज सेवा संस्थान के अध्यक्ष, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट एवं ब्रजभूमि कल्याण परिषद् के अध्यक्ष पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ ने कहा कि महाराजश्री अपनी सतायु में भी समूचे विश्व में श्रीमद्भगवद्गीता का सघन प्रचार-प्रसार कर असंख्य व्यक्तियों को सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

इस अवसर पर मुक्तानंद चित्र वीथि के अध्यक्ष ₹यूपी रत्न₹ चित्रकार द्वारिका आनन्द, सीता रसोई के प्रबंधक आचार्य अंशुल शर्मा, ब्रज जन सेवा समिति के अध्यक्ष डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य ईश्वरचन्द्र रावत, महाराजश्री के परम कृपापात्र शिष्य स्वामी हरिकेश ब्रह्मचारी महाराज, आश्रम के व्यवस्थापक स्वामी लोकेशानंद महाराज आदि की उपस्थिति विशेष रही।

भक्ति धाम में दिव्यांग व्यक्तियों को निःशुल्क कृत्रिम अंग व उपकरणों का वितरण 09 मार्च को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मणि विहार, सैक्टर-1 स्थित भक्ति धाम में प्रमुख समाज सेविका श्रीमती कृष्णा देवी गोयल (धर्मपत्नी कृष्ण गोपाल गोयल) माताजी राजकुमार गोयल (कृष्णा राइस मिल्स, पातडा) की चतुर्थ पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट(रजि.) पटियाला/वृन्दावन एवं कल्याण₹ करोति, मथुरा के संयुक्त तत्वावधान में 09 मार्च 2026 को प्रातः 09 बजे से दोपहर 01 बजे तक दिव्यांग सहायता शिविर आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते हुए आयोजन के समन्वयक ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि इस दिव्यांग सहायता शिविर में विकलांगों के लिए कृत्रिम अंग, व्हीलचेयर एवं वॉकर आदि का निःशुल्क वितरण भक्ति धाम वैलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष के. एल. बंसल, सचिव संदीप कुमार सिंघला, कोषाध्यक्ष रामशरण गुप्ता, कल्याण₹ करोति, मथुरा के सचिव सुनील शर्मा एवं प्रमुख समाजसेवी राजकुमार गोयल आदि के द्वारा किया जायेगा।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि इस दिव्यांग सहायता शिविर में देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे।शिविर का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ होगा।

राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान महिला, पानीपत में छात्राओं ने खेला फाग

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान महिला, पानीपत में होली पर्व को लेकर छात्राओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। संस्थान परिसर में छात्राओं ने पारंपरिक तरीके से फाग खेलकर रंगों के इस पर्व को बड़े हर्षोल्लास और सांस्कृतिक वातावरण के साथ मनाया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने लोक परंपराओं के अनुसार फाग गाकर और रंगों के साथ होली खेलकर उत्सव का आनंद लिया।

संस्थान में कार्यरत शिक्षिका सुशीला और सावित्री ने छात्राओं को फाग के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि फाग केवल रंगों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह हमारी समृद्ध लोक संस्कृति और परंपराओं से जुड़ा पर्व है। फाग के माध्यम से आपसी प्रेम, भाईचारा और सौहार्द का संदेश मिलता है। उन्होंने छात्राओं को बताया कि प्राचीन समय में गांवों में महिलाएं और युवतियां समूह बनाकर फाग गाती थीं और पारंपरिक ढंग से रंगों के साथ होली मनाती थीं, जिससे समाज में आपसी एकता और मेलजोल बढ़ता था।

उन्होंने यह भी कहा कि होली का पर्व हमें सभी भेदभाव भुलाकर प्रेम, सद्भाव और खुशियों के रंगों में रंगने का संदेश देता है। इसलिए हमें इस त्योहार को सुरक्षित, मर्यादित और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप मनाना चाहिए।

इस अवसर पर हॉस्टल वार्डन रजनी ने भी छात्राओं के साथ होली खेली और उन्हें होली की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने एक-दूसरे को रंग लगाकर और फाग गाकर उत्सव को यादगार बना दिया। पूरे परिसर में खुशी और उत्साह का माहौल बना रहा।

बरवाला में ओमप्रकाश रहेजा दंपति की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर पहुंचे कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) बरवाला में ओमप्रकाश रहेजा एवं शकुंतला रहेजा की 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर उन्हें शुभकामनाएं देने के लिए हरियाणा सरकार के कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा उनके बरवाला स्थित आवास पर पहुंचे।

कैबिनेट मंत्री के बरवाला पहुंचने पर ओमप्रकाश रहेजा के सुपुत्र एवं वार्ड नंबर 9 बरवाला के पूर्व पार्षद प्रतिनिधि विक्की रहेजा ने उन्हें शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। इस दौरान कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने ओमप्रकाश रहेजा और शकुंतला रहेजा के साथ केक काटकर उन्हें 50वीं वर्षगांठ की शुभकामनाएं दीं और उनके उत्तम स्वास्थ्य तथा लंबी आयु की कामना की।

इस मौके पर कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा के साथ पहुंचे पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा तथा नगर परिषद बरवाला के चेयरमैन रमेश बैटरीवाला का भी विक्की रहेजा ने शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया।

पूर्व पार्षद विक्की रहेजा ने कहा कि उनके छोटे से बुलावे पर कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा सहित सभी गणमान्य लोगों ने उनकी पारिवारिक खुशी में शामिल होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई है, जिसके लिए वह सभी का आभार व्यक्त करते हैं।

इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन मार्केट कमेटी रणधीर धीरू, जिला आईटी सह प्रमुख भाजपा कमल हंदूजा, राजेश मनुजा, मंडल मीडिया प्रभारी राजेश सलूजा, भाजपा नेता तरसेम पूनिया, पूर्व पार्षद कविता रहेजा, सोनिया कथूरिया, रिया मनुजा, ममता कथूरिया, ज्योति कथूरिया, प्राची जावा, डॉ नीतू गाई, आशा रहेजा, साहिल कथूरिया, अशोक रहेजा, सिम्मी रहेजा, गीता सरदाना, पूर्व पार्षद वार्ड कविता रहेजा, वर्षा कामरा, निशा वधवा, उमेश कौशिक, कश्मीरी लाल, कुलदीप जांगड़ा सहित रहेजा परिवार के सदस्य और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कानपुर में भी जमकर खेली गई होली पुलिस वाले भी थिरके, मारपीट ,बवाल में कई गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां होलिका दहन के बाद जमकर होली खेली गई। पुलिस लाइन में भी इसका आयोजन किया गया जिसमें पुलिस के सभी छोटे-बड़े अधिकारियों कर्मचारियों भी ने एक दूसरे से होली खेली। इस दौरान नशेबाजी और बवाल करने वालों के खिलाफ कमिश्नरेट पुलिस ने तगड़ी तैयारी भी रही। और जो कोई भी ऐसा करता पाया गया। उसके खिलाफ कार्रवाई भी की गई।

दरअसल उत्तर प्रदेश के इस अति संवेदनशील महानगर में होली दीपावली जैसा कोई भी त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करना बहुत सरल नहीं माना जाता। यही वजह है कि होली को लेकर कमिश्नरेट पुलिस ने हर तरह से तगड़ी तैयारी पहले ही कर ली थी ,जिसके तहत रंग खेलने के दौरान शराब पीकर बवाल करने और मारपीट आदि करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई। इसके लिए यहां के सभी थानेदारों को पुलिस कमिश्नर रघुवीर लाल द्वारा आवश्यक आदेश निर्देश पहले ही दिए जा चुके थे। रंग खेलने के दौरान बवाल करने वालों से निपटने के लिए सुरक्षा समेत तगड़ी तैयारी के अनुरूप जगह-जगह पर पुलिसकर्मी तैनात किए गए थे।

जहां तक होली के दौरान बवाल की बात है । कई थाना क्षेत्रों में रंग लगाने को लेकर और शराबियों की वजह से भी मारपीट और झगड़े की घटनाएं हुई ,जिसकी सूचना पर तत्काल पहुंची पुलिस ने कई लोगों को हिरासत में भी लिया। इस तरह की घटनाएं एक आध को छोड़कर जिले के लगभग हर थाना क्षेत्र में हुई। पुलिस ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है।

भेदभाव के दौर में न्याय व्यवस्था की चुनौती- डॉ. विक्रम चौरसिया

परिवहन विशेष न्यूज

प्रख्यात हिंदी साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु का यह विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक है कि समाज को मानवीय और मनुष्य को सामाजिक बनाना ही वास्तविक मुक्ति का मार्ग है। किंतु विडंबना यह है कि आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के बावजूद न्याय तक समान पहुँच आज भी एक गंभीर सामाजिक चुनौती बनी हुई है।

किसी भी लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति उसकी न्याय व्यवस्था में निहित होती है। न्याय केवल कानूनों के अस्तित्व से नहीं, बल्कि उनके निष्पक्ष, पारदर्शी और समान क्रियान्वयन से स्थापित होता है। जब पद, प्रभाव अथवा आर्थिक सामर्थ्य न्याय प्रक्रिया को प्रभावित करती प्रतीत होती है, तब आम नागरिक का विश्वास व्यवस्था से डगमगाने लगता है।

व्यवहारिक स्तर पर अनेक बार यह अनुभव किया जाता है कि सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित नहीं हो पाता। कई परिस्थितियों में पीड़ित व्यक्ति को अपनी शिकायत दर्ज कराने तक संघर्ष करना पड़ता है, जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित समानता के मूल सिद्धांत के विपरीत है। न्याय यदि सहज अधिकार के स्थान पर जटिल और दबावपूर्ण प्रक्रिया बन जाए, तो समाज में अविश्वास का वातावरण उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

प्रकृति स्वयं समानता का संदेश देती है। मनुष्य जीवन की शुरुआत समान जैविक परिस्थितियों से करता है और अंततः सभी को मिट्टी में ही विलीन होना है। जब जीवन और मृत्यु का सत्य सबके लिए समान है, तब आर्थिक, सामाजिक अथवा जातिगत भेदभाव का औचित्य स्वतः प्रश्नों के घेरे में आ जाता है।

समय की मांग है कि प्रशासनिक पारदर्शिता, संवेदनशील न्याय प्रणाली और सामाजिक जागरूकता को सुदृढ़ किया जाए, ताकि न्याय किसी वर्ग का विशेषाधिकार न रहकर प्रत्येक नागरिक का वास्तविक अधिकार बन सके। एक स्वस्थ और सशक्त लोकतंत्र वही है, जहाँ न्याय भय का नहीं बल्कि विश्वास और समानता का प्रतीक बने।

देशहित और सुरक्षा सर्वोपरि : अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ देशहित, जिम्मेदारी और संवैधानिक मर्यादाओं का भी ध्यान रखा

कश्मीर जैसे संवेदनशील मुद्दों पर बयान देते समय अधिक जिम्मेदारी बरतनी चाहिए, क्योंकि इन विषयों का सीधा संबंध राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक शांति से जुड़ा होता है।

यदि कोई व्यक्ति या समूह देश के भीतर रहकर लगातार ऐसी बातें करता है जो राष्ट्रहित, देश की सुरक्षा या सामाजिक सौहार्द के विरुद्ध समझी जाती हैं, तो उस पर कानून के दायरे में रहते हुए कार्रवाई होनी चाहिए क्युकी देश की सुरक्षा सर्वोपरि हैं।

भारत में रहने वाले हर नागरिक को अपने विचार रखने का अधिकार है, लेकिन यह अधिकार संविधान की सीमाओं और राष्ट्रीय हितों के अनुरूप होना चाहिए।

जनमत का एक बहुसंख्यक हिस्सा उन लोगों की आलोचना करता है जो विदेशी नेताओं या विचारधाराओं के समर्थन में अत्यधिक भावनात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, जबकि देश के दु:ख पर अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं दिखाते।

"भारत में रहना है तो देशहित को सर्वोच्च मानते हुए, संविधान की मर्यादाओं में रहकर ही अपनी बात कही जानी चाहिए।"

उत्तर प्रदेश। देश और दुनिया में चल रही राजनीतिक घटनाओं के बीच भारत में भी कई मुद्दों जैसे ₹देश की सुरक्षा₹ को लेकर बहस तेज हो गयी है। ऐसे समय में समाज के विभिन्न वर्गों से यह आवाज़ उठ रही है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ देशहित देश की सुरक्षा और संवैधानिक मर्यादाओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

इंद्रभान भदौरिया का मानना है कि भारत में रहने वाले हर नागरिक को अपने विचार रखने का अधिकार है, लेकिन यह अधिकार संविधान की सीमाओं और राष्ट्रीय हितों के अनुरूप होना चाहिए।

जनमत का एक बहुसंख्यक हिस्सा उन लोगों की आलोचना करता है जो विदेशी नेताओं या विचारधाराओं के समर्थन में अत्यधिक भावनात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, जबकि देश के दु:ख पर अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं दिखाते।

उन्होंने आगे कहा कि कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में विभिन्न देशों के बीच मतभेद और तनाव सामान्य बात है, लेकिन ऐसे समय में भारत के नागरिकों को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव को प्राथमिकता देनी चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि कश्मीर जैसे संवेदनशील मुद्दों पर बयान देते समय अधिक जिम्मेदारी बरतनी चाहिए, क्योंकि इन विषयों का सीधा संबंध राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक शांति से जुड़ा होता है।

सर्व समाज के वर्गों की राय है कि यदि कोई व्यक्ति या समूह देश के भीतर रहकर लगातार ऐसी बातें करता है जो राष्ट्रहित या सामाजिक सौहार्द के विरुद्ध समझी जाती हैं, तो उस पर कानून के दायरे में रहते हुए कार्रवाई होनी चाहिए क्युकी देश की सुरक्षा सर्वोपरि हैं। हालांकि लोकतंत्र में विचारों का मतभेद भी उतना ही महत्वपूर्ण है, बशर्ते वह संविधान और कानून की मर्यादा में हो। लेक़नि देश की सुरक्षा के विरुद्ध बात नहीं होनी चाहिए।

उनका मानना है कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की ताकत ही यही है कि यहाँ स्वतंत्रता और जिम्मेदारी दोनों साथ-साथ चलते हैं। इसलिए नागरिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने विचार व्यक्त करते समय देश की सुरक्षा, एकता, अखंडता और संविधान की गरिमा को सर्वोपरि रखें।

आखिर में उन्होंने कहा कि "भारत में रहना है तो देशहित और देश की सुरक्षा को सर्वोच्च मानते हुए, संविधान की मर्यादाओं में रहकर ही अपनी बात कही जानी चाहिए।"

सदियों से समाज में विज्ञान संचार करती आई महिलाएं

● डॉ. विजय गर्ग

आधुनिक युग में विज्ञान संचार को नई दिशा देने वाली महिलाओं में मैरी क्यूरी का नाम अग्रणी है। उन्होंने रेडियम की खोज के माध्यम से विज्ञान को आम लोगों के जीवन से जोड़ा। वहीं जेन गुडॉल ने अपने शोध और पुस्तकों के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण का संदेश विश्वभर में फैलाया। उनकी सरल भाषा और संवेदनशील प्रस्तुति ने विज्ञान को मानवीय दृष्टिकोण से जोड़ दिया।

विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है; यह समाज की सोच, जीवनशैली और प्रगति से जुड़ा हुआ है। विज्ञान के विकास में जहाँ पुरुष वैज्ञानिकों के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं, वहीं सदियों से अनेक महिलाओं ने न केवल वैज्ञानिक खोजों में योगदान दिया, बल्कि विज्ञान को समाज तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी किया। विज्ञान संचार के इस ऐतिहासिक सफर में महिलाओं की भूमिका प्रेरणादायक और परिवर्तनकारी रही है।

प्राचीन काल में भी महिलाओं ने ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाई। भारत में गार्गी वाचक्नवी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने दार्शनिक और वैज्ञानिक चिंतन को समाज में चर्चा का विषय बनाया। उनके प्रश्न और तर्क उस समय के ज्ञान-विज्ञान की गहराई को जनमानस तक ले गए। यह विज्ञान संचार का ही एक रूप था, जहाँ जिज्ञासा और संवाद के माध्यम से ज्ञान का विस्तार हुआ।

आधुनिक युग में विज्ञान संचार को नई दिशा देने वाली महिलाओं में मैरी क्यूरी का नाम अग्रणी है। उन्होंने रेडियम की खोज के माध्यम से विज्ञान को आम लोगों के जीवन से जोड़ा। वहीं जेन गुडॉल ने अपने शोध और पुस्तकों के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण का संदेश विश्वभर में फैलाया। उनकी सरल भाषा और संवेदनशील प्रस्तुति ने विज्ञान को मानवीय दृष्टिकोण से जोड़ दिया।

भारत में भी विज्ञान संचार के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय है। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति युवाओं में उत्साह जगाया। उनकी जीवन यात्रा ने यह संदेश दिया कि विज्ञान किसी एक वर्ग या लिंग तक सीमित नहीं है। इसी प्रकार टेस्सी थॉमस, जिन्हें "मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया" कहा जाता है, ने न केवल रक्षा विज्ञान में योगदान दिया बल्कि अपने व्याख्यानों और संवादों के माध्यम से विज्ञान को समाज के निकट लाने का कार्य किया।

डिजिटल युग में विज्ञान संचार के नए मंच उभरे हैं। सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और यूट्यूब जैसे माध्यमों पर अनेक महिला वैज्ञानिक और शिक्षिकाएँ जटिल वैज्ञानिक विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर रही हैं। इससे विज्ञान केवल किताबों तक सीमित न रहकर आम जन-जीवन का हिस्सा बन रहा है। कोविड-19 महामारी के दौरान महिला डॉक्टरों, शोधकर्ताओं और स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने सही जानकारी पहुँचाकर समाज में वैज्ञानिक सोच को मजबूत किया।

महिलाओं द्वारा विज्ञान संचार का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि वे समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर बच्चों और युवतियों, के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती हैं। जब कोई लड़की किसी महिला वैज्ञानिक को मंच पर देखती है, तो उसके भीतर भी विज्ञान के प्रति आत्मविश्वास जागृत होता है। इस प्रकार विज्ञान संचार केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया भी है।

आज आवश्यकता है कि विज्ञान संचार में महिलाओं की भूमिका को अधिक मान्यता और समर्थन मिले। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और मीडिया संस्थानों को ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए। विज्ञान तब ही सशक्त बनता है जब वह समाज के हर वर्ग तक पहुँचे—और इस सेतु का निर्माण सदियों से महिलाएँ करती आई हैं।

प्राचीन काल: लोक ज्ञान की संरक्षिकाएँ

इतिहास के शुरुआती दौर में विज्ञान आज की तरह प्रयोगशालाओं में बंद नहीं था। वह जीवन जीने की कला थी।

घरेलू उपचार और वनस्पति विज्ञान: प्राचीन समाजों में महिलाएं ही प्राथमिक चिकित्सक थीं। उन्हें जड़ी-बूटियों के रासायनिक गुणों और उनके प्रभाव का गहरा ज्ञान था, जिसे वे गीतों और कहानियों के जरिए समाज में प्रसारित करती थीं।

कृषि विज्ञान: बीजों का चयन, मिट्टी की उर्वरता और मौसम चक्र की समझ महिलाओं ने ही विकसित की और इसे एक सामूहिक ज्ञान बनाया।

. मध्यकाल: चुनौतियों के बीच संचार

मध्यकाल में जब शिक्षा पर पुरुषों का एकाधिकार बढ़ने लगा, तब भी महिलाओं ने हार नहीं मानी।

पांडुलिपियाँ और अनुवाद: कई विदुषी महिलाओं ने वैज्ञानिक ग्रंथों का अनुवाद किया ताकि वे आम लोगों की समझ में आ सकें।

रसोई—एक प्रयोगशाला: खाद्य संरक्षण और किण्वन जैसी जटिल वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को महिलाओं ने 'पारंपरिक व्यंजनों' के रूप में समाज में स्थापित किया।

***. आधुनिक युग और वैज्ञानिक चेतना**

१९वीं और २०वीं शताब्दी में महिलाओं ने औपचारिक रूप से विज्ञान संचारक की भूमिका निभाई:

मैरी क्यूरी और इरेन्ज जूलियट-क्यूरी: इन्होंने न केवल शोध किया, बल्कि आम जनता और सैनिकों के बीच रेडियोलॉजी के महत्व को पहुँचाया।

राचेल कार्सन: उनकी पुस्तक 'साइलेंट स्प्रिंग' ने पर्यावरण विज्ञान को हर घर की चर्चा का विषय बना दिया। उन्होंने जटिल पारिस्थितिकी तंत्र को इतनी सरलता से समझाया कि पूरी दुनिया में पर्यावरण आंदोलन शुरू हो गया।

४. भारतीय परिप्रेक्ष्य: एक अनूठी विरासत

भारत में विज्ञान संचार की जड़ें बहुत गहरी हैं:

लोक परंपराएं: दादी-नानी के बटुए से लेकर लोक कथाओं तक, विज्ञान हमेशा मौजूद रहा।

आधुनिक संचारक: आज भारत में ईरावती कर्वे जैसी नृवंशविज्ञानी और गगनदीप कांग जैसी वैज्ञानिक जटिल चिकित्सा विज्ञान को सरल भाषा में जनता तक पहुँचा रही हैं।

५. आज की डिजिटल क्रांति

आज के युग में सोशल मीडिया, पॉडकास्ट और ब्लॉग्स के माध्यम से महिलाएं विज्ञान को 'लोकतांत्रिक' बना रही हैं। वे न केवल वैज्ञानिक तथ्यों को साझा कर रही हैं, बल्कि समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को वैज्ञानिक तर्क से चुनौती भी दे रही हैं।

निष्कर्ष: महिलाओं ने विज्ञान को केवल पढ़ा ही नहीं, बल्कि उसे 'जीया' और 'बाँटा' है। उनका योगदान केवल प्रयोगशाला की चहारदीवारी तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने विज्ञान को समाज की भाषा दी है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विज्ञान की ज्योति को जन-जन तक पहुँचाने में महिलाओं का योगदान अमूल्य रहा है। उन्होंने संवाद, लेखन, शिक्षण और शोध के माध्यम से विज्ञान को केवल ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन का अंग बनाया है।

डॉविजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

भंडारण के संकट से जूझते किसान

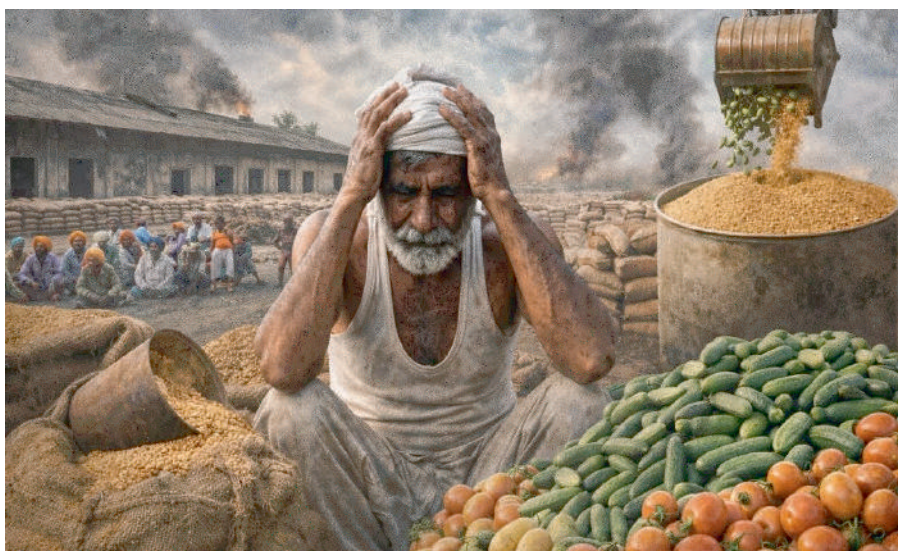

डॉ विजय गर्ग

भारत कृषि प्रधान देश है, परंतु विडंबना यह है कि अन्नदाता कहलाने वाले किसान आज भी अपनी उपज के सुरक्षित भंडारण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। खेतों में पसीना बहाकर तैयार की गई फसल जब उचित भंडारण के अभाव में खराब हो जाती है, तो यह केवल आर्थिक नुकसान नहीं, बल्कि किसान की उम्मीदों पर भी चोट होती है।

समस्या की जड़

देश में अनाज उत्पादन लगातार बढ़ रहा है, लेकिन उसके अनुपात में वैज्ञानिक और आधुनिक गोदामों की संख्या पर्याप्त नहीं है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में किसान अपनी फसल को खुले में या अस्थायी टीन-शेड के नीचे रखने को मजबूर हैं। बारिश, नमी, कीट और चूहों से अनाज खराब हो जाता है। छोटे और सीमांत किसान, जिनकी संख्या अधिक है, निजी गोदाम किराए पर लेने में भी सक्षम नहीं होते।

कई बार सरकारी खरीद केंद्रों पर समय पर खरीद नहीं होती, जिससे किसानों को मजबूरी में फसल औने-पौने दामों पर बेचनी पड़ती है। इससे उनकी आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सरकारी प्रयास और सीमाएँ

भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) देश में अनाज की खरीद और भंडारण का प्रमुख दायित्व निभाता है। इसके बावजूद, भंडारण क्षमता कई राज्यों में मांग से कम पड़ जाती है।

केंद्रीय गोदाम निगम (सीडब्ल्यूसी) और विभिन्न राज्य वेयरहाउसिंग निगम भी गोदाम उपलब्ध कराते हैं, परंतु ग्रामीण स्तर पर इनकी पहुँच सीमित है। हाल के वर्षों में निजी क्षेत्र की भागीदारी और आधुनिक साइलो प्रणाली को बढ़ावा देने की पहल की गई है, लेकिन इसका लाभ अभी सभी किसानों तक नहीं पहुँच पाया है।

प्रभाव

1. आर्थिक हानि – फसल खराब होने से सीधे आय में कमी आती है।

2. कर्ज का दबाव – नुकसान की भरपाई के लिए किसान कर्ज लेने को मजबूर हो जाते हैं।

3. बाजार में अस्थिरता – जब फसल अधिक मात्रा में एक साथ बिकती है, तो कीमतें गिर जाती हैं।

4. खाद्य सुरक्षा पर असर – खराब भंडारण से राष्ट्रीय स्तर पर भी अनाज की बर्बादी होती है।

समाधान की दिशा

ग्रामीण स्तर पर छोटे गोदाम: पंचायत स्तर पर सामुदायिक भंडारण केंद्र स्थापित किए जाएँ।

वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग: आधुनिक साइलो, कोल्ड स्टोरेज और नमी-रोधी तकनीक को बढ़ावा दिया जाए।

वेयरहाउस रसीद प्रणाली: किसान फसल को गोदाम में रखकर रसीद के आधार पर बैंक से ऋण ले सकें और उचित समय पर बेच सकें। डिजिटल पारदर्शिता: खरीद और भंडारण की प्रक्रिया को ऑनलाइन और पारदर्शी बनाया जाए।

निष्कर्ष

किसान केवल उत्पादनकर्ता नहीं, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा के संरक्षक हैं। यदि उन्हें उचित भंडारण सुविधा मिले, तो वे अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं और कृषि को अधिक लाभकारी बना सकते हैं। भंडारण संकट का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयास और नीति के प्रभावी क्रियान्वयन से संभव है।

जब तक किसान की फसल सुरक्षित नहीं, तब तक उसकी मेहनत भी सुरक्षित नहीं। इसलिए समय की मांग है कि भंडारण व्यवस्था को सुदृढ़ कर किसान को आर्थिक और मानसिक राहत दी जाए

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कंक्रीट की दीवारें: भारतीय घरों के लिए सही फिट: संजय गोयनका

संजय कुमार बाठला

कंक्रीट से हर कोई परिचित है। दुनिया में सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली, बहुमुखी निर्माण सामग्री में से एक, यह सदियों से विभिन्न रूपों में मौजूद है। व्यस्त निर्माण की दुनिया में, अधिक से अधिक लोग मजबूत संरचनाएं चाहते हैं जो लंबे समय तक चलें। घर के निर्माण में नींव, बीम और स्तंभों की संरचनात्मक अखंडता, सुरक्षा और दीर्घकालिक स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए कंक्रीट की ताकत महत्वपूर्ण है। इसकी ताकत और स्थायित्व इसे लंबे समय तक भारी संरचनाओं को सहारा देने में सक्षम बनाता है। कंक्रीट एक विश्वसनीय और लागत प्रभावी सामग्री है जो भारी भार और कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों का सामना कर सकती है। विभिन्न आकारों और आकारों के लिए इसकी अनुकूलन क्षमता इसे छोटे आवासीय परियोजनाओं से लेकर प्रमुख बुनियादी ढांचे के विकास तक, अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला में उपयोग करने में सक्षम बनाती है। कंक्रीट आर्थिक लाभ भी प्रदान करता है, क्योंकि यह लागत प्रभावी और कम रखरखाव वाला है, जिससे संपत्ति मालिकों के पैसे बचते हैं। 1----कॉस्ट इफेक्टिव----------

अपना घर बनाते समय आप जो भी फैसला लेते हैं, उसका असर आपके लंबे समय के बजट पर पड़ता है। और जबकि बहुत से लोग ज़मीन, लेबर या फिनिशिंग पर ध्यान देते हैं, एक बड़ा कॉस्ट-सेविंग मौका जिस पर अक्सर ध्यान नहीं जाता, वह है कंक्रीट का चुनाव।

हाउसिंग प्रोजेक्ट्स के लिए कंक्रीट स्टील, एस्फाल्ट, लकड़ी और पत्थर के मुकाबले सस्ता हो सकता है।

इसके अलावा, कंक्रीट की लंबी उम्र और कम मेंटेनेंस की ज़रूरतों का मतलब है कि इसकी ओनरशिप की कुल कॉस्ट काफ़ी कम है।

कंक्रीट दूसरे मटीरियल की तुलना में ज़्यादा ड्यूरेबिलिटी, कम मेंटेनेंस की ज़रूरतों और तेज़ कंस्ट्रक्शन स्पीड के ज़रिए लंबे समय में कॉस्ट में काफ़ी बचत करता है। यह स्ट्रक्चरल रिपेयर और इंश्योरेंस खर्च को कम करके कॉस्ट कम करता है।

कंक्रीट के कई अंदरूनी फायदे, जैसे आग से बचाव, साउंड इंसुलेशन, मज़बूती और कम से कम वाइब्रेशन, सभी जानते हैं।

एयर कंडीशनिंग और हीटिंग को कम करके बिल्डिंग्स की एनर्जी खपत को कम करने की कंक्रीट की क्षमता, इसके CO_2 फुटप्रिंट से कहीं ज़्यादा है।

2---अग्नि प्रतिरोध---------- कंक्रीट आग के प्रति प्रतिरोधी है, जो इसे जंगल की आग या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त क्षेत्रों में इमारतों के लिए एक अच्छा विकल्प बनाता है।

आग में, कंक्रीट अच्छा प्रदर्शन करता है - एक इंजीनियर संरचना के रूप में और अपने आप में एक सामग्री के रूप में। सीमेंट और समुच्चय की संरचना के कारण इसे उच्चतम श्रेणी AI अग्नि प्रतिरोध वर्गीकरण प्राप्त है, जो जलते नहीं हैं या जहरीले धुएं का उत्सर्जन नहीं करते हैं और इनमें ऊष्मा हस्तांतरण की धीमी दर होती है।

ऊष्मा हस्तांतरण की यह धीमी दर ही कंक्रीट को न केवल आसन्न स्थानों के बीच एक प्रभावी अग्नि ढाल के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाती है, बल्कि आग से होने वाले नुकसान से भी बचाती है। इसलिए, एक घर में दीवारों जैसी कुछ कंक्रीट संरचनात्मक तत्व अग्नि ढाल के रूप में कार्य करते हैं,

आसन्न कमरों को लपटों से बचाते हैं और तीव्र गर्मी के संपर्क में होने के बावजूद उनकी संरचनात्मक अखंडता बनाए रखते हैं।

3-----एनवायरनमेंटल फायदे----

कंक्रीट अपने बहुत ज़्यादा टिकाऊपन, लंबे जीवनकाल और रिसाइकिल होने की वजह से पर्यावरण के लिए बहुत फ़ायदेमंद है, जिससे कच्चे माल और बार-बार मरम्मत की ज़रूरत कम हो जाती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है और कचरा कम होता है।

जबकि लकड़ी, डामर और कुछ धातुओं जैसे दूसरे मटीरियल को बार-बार मरम्मत और बदलने की ज़रूरत होती है, कंक्रीट को समय की कसौटी पर खरा उतरने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

कंक्रीट मिक्स में फ्लाई ऐश जैसे इंडस्ट्रियल वेस्ट का इस्तेमाल होता है, जो कोयला बनाने का एक बाय-प्रोडक्ट है। इंडस्ट्रियल वेस्ट मटीरियल के इस्तेमाल से नए कच्चे माल की ज़रूरत कम हो जाती है। कंक्रीट स्ट्रक्चर को कम सरफेस मेंटेनेंस की ज़रूरत होती है और इनकी उम्र भी ज़्यादा होती है, जो क्लाइमेट चेंज को कम करने में मदद करता है।

यह अपनी लंबी सर्विस लाइफ़ के दौरान नैचुरली कार्बन डाइऑक्साइड सोख लेता है।

यह बहुत ज़्यादा एनर्जी एफ़िशिएंट है और अपनी लाइफ़ साइकिल में इसे अलग करने की क्षमता रखता है, जिससे नए रिसोर्स की मांग कम करके और प्रीकास्ट एलिमेंट की लाइफ़ साइकिल बढ़ाकर कार्बन एमिशन कम होता है।

इसकी स्थिरता को आगे बढ़ाते हुए, विध्वंस परियोजना के बाद कंक्रीट का अक्सर पुनः उपयोग किया जा सकता है। कंक्रीट संरचनाएं जो अपने सेवा जीवन के अंत तक पहुँच गई हैं, उन्हें अलग किया जा सकता है, पुनर्चक्रित किया जा सकता है और नई सामग्री में नवीनीकृत किया जा सकता है। यह प्रतिस्थापन कंक्रीट के समग्र उत्पादन से जुड़े कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद करता है।

4----स्थायित्व और ताकत-------

क्या आपने कभी उन मजबूत और स्थिर संरचनाओं के बारे में सोचा है जो बदलते मौसम और निरंतर टूट-फूट के बीच शान से खड़ी रहती हैं?

विश्वसनीय, टिकाऊ नींव बनाने के लिए सही नींव सामग्री चुनना आवश्यक है जो समय की कसौटी पर खरी उतरे।

संरचना के वजन को सहारा देने और इसे नीचे की धरती पर समान रूप से वितरित करने के लिए एक ठोस नींव का निर्माण महत्वपूर्ण है।

कंक्रीट भारी लोड और खराब मौसम को झेल सकता है, और रेजिडेंशियल बिल्डिंग्स के लिए एक स्टेबल, कम मेंटेनेंस वाला बेस देता है। लेखक हिंडकॉन केमिकल्स लिमिटेड कोलकाता के CMD हैं।

अदालत में सख्ती, समाज से संवाद: न्यायपालिका की बदलती छवि

अमरपाल सिंह वर्मा

हमारे देश में न्यायपालिका की पहचान लंबे समय तक आम जन से एक निश्चित दूरी से निर्मित होती रही है। जब एक न्यायाधीश के जीवन की कल्पना करते हैं तो उनके अदालत तक सीमित होने, सामाजिक आयोजनों से लगभग अनुपस्थित और आम नागरिकों से औपचारिक दूरी बनाकर रहने की तस्वीर उभरती है। यह दूरी किसी व्यक्तिगत अहंकार का नहीं बल्कि एक सुविचारित न्यायिक परंपरा का हिस्सा रही है। माना जाता रहा है कि जज जितना कम दिखेगा, उसका फैसला उतना ही निष्पक्ष रहेगा। जितना कम बोलेगा, उतनी ही स्पष्टता से वह न्याय मांगती आवाजों को सुनेगा लेकिन समय के साथ यह धारणा बदल रही है।

वर्तमान में राजस्थान के धौलपुर में पदस्थ जिला न्यायाधीश संजीव मागो इस बदलती तस्वीर के फ्रेम में एक ठोस उदाहरण के रूप में नजर आते हैं। उनकी अदालत से आए निर्णय यह स्पष्ट करते हैं कि न्यायिक अनुशासन, सख्ती और कानून के अनुपालन में कोई ढील नहीं है। जहां दोष सिद्ध हुआ, वहां सजा भी उसी अनुपात में दी गई चाहे वह अल्पावधि की सजा हो या कठोरतम दंड। अदालत के भीतर उनका व्यक्तित्व उसी पारंपरिक न्यायिक कसौटी पर खरा उतरता है जिसकी समाज अपेक्षा करता है लेकिन अदालत के बाहर वही न्यायाधीश एक अलग ही दृश्य रचते नजर आते हैं। सुबह स्टेडियम में आम लोगों के साथ दौड़ लगाते हुए कभी युवाओं के साथ, कभी बच्चों के बीच। फिटनेस को जीवन का सहज हिस्सा बनाते हुए, बिना किसी औपचारिकता के। मंच पर बैठकर हार्मोनियम के साथ शास्त्रीय गायन, शेर-ओ-शायरी, गजलों की भावपूर्ण प्रस्तुति और कभी-कभी नृत्य के दृश्य, जो सार्वजनिक मंचों और सोशल मीडिया पर दिखाई देते हैं। यह सब जजों की उस पारंपरिक छवि से मेल नहीं खाता जिसमें जज को गंभीर, मौन और लगभग अदृश्य माना गया है। सवाल यह नहीं है कि कोई न्यायाधीश गाता है, दौड़ता है या नृत्य करता है बल्कि यह है कि क्या न्यायपालिका की गरिमा केवल दूरी से ही सुरक्षित रह सकती है या फिर वह संयमित सार्वजनिक उपस्थिति के साथ भी कायम रह सकती है?

अब तक न्यायाधीशों को यही इशारा मिलता रहा है कि वे सामाजिक गतिविधियों से दूरी बनाए रखें, आम लोगों के साथ संपर्क को सीमित रखें और सार्वजनिक मंचों पर न्यूनतम नजर आएं। इसका उद्देश्य किसी भी प्रकार के पक्षपात, अपेक्षा या दबाव की संभावना को कम से कम करना ही था। माना जाता था कि जज भी आखिर इंसान ही हैं और यदि वह आम लोगों के साथ ज्यादा घुले-मिलेंगे, दोस्ताना संबंध बनाएंगे तो कभी इसकी कीमत न्याय को चुकानी पड़ सकती है। इसी वजह से पिछले कई दशकों में हमने जजों को कभी जन संलिप्त भाव में नहीं देखा लेकिन बदलते सामाजिक परिदृश्य में सवाल उठता है कि अगर संलिप्त न होने से यदि निष्पक्ष रहने में मदद मिलती है तो क्या जरूरत से निर्लिप्तता न्यायपालिका को समाज से दूर नहीं कर देती?

वर्तमान में भले ही अदालतें आम जन के लिए न्याय पाने का आखिरी सहारा हैं लेकिन एक मायने में अदालतों में तारीख-दर-तारीख, कठिन भाषा और न्याय की धीमी गति आम नागरिक के लिए पैसे और समय की फिजूलखर्ची का प्रतीक भी बन चुकी है। ऐसे में यदि कोई न्यायाधीश अपने सार्वजनिक आचरण से यह संकेत देता है कि वह समाज से कटा हुआ नहीं है तो क्या उसे न्याय पालिका के हितों के विरुद्ध माना जाए? जज संजीव मागो की सार्वजनिक छवि इसी प्रश्न को जन्म देती है। वह न केवल सार्वजनिक रूप से बल्कि सोशल मीडिया पर भी बराबर सक्रिय हैं। इससे उनकी पहचान उनके निर्णयों से कम और उनके आचरण से अधिक बनती दिखाई देती है। यह उस व्यक्ति की सामाजिक स्वीकृति है जो कठोर न्यायिक फैसले लेने के बावजूद मानवीय और रचनात्मक जीवन जीता है।

एक जज का यह बदलाव सभी को सहज लगे, यह आवश्यक नहीं है। कुछ लोग इसे न्यायिक मर्यादा की पारंपरिक सीमाओं का अतिक्रमण मान सकते हैं तो कुछ इसे नई न्याय पालिका के आत्म विश्वास का संकेत भी समझ सकते हैं। यानी एक ऐसी संस्था, जो अब समाज से संवाद करने से नहीं हिचकती है। संवाद समाज को समझने का माध्यम है जबकि हस्तक्षेप यकीनन न्याय को प्रभावित कर सकता है। यदि कोई न्यायाधीश सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहते हुए भी अपने निर्णयों में पूरी तरह निष्पक्ष और कठोर बना रहता है तो इसे विरोधाभास नहीं बल्कि संतुलन का उदाहरण ही कहा जाएगा। जज संजीव मागो का सार्वजनिक आचरण यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि क्या न्यायपालिका को केवल एक निर्जीव संस्था के रूप में ही देखा जाना चाहिए या फिर उसे संवेदनशील, अनुशासित और सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ भी स्वीकार किया जा सकता है?

जज संजीव मागो के रूप में भले ही आज एक चेहरा दिखाई देता हो लेकिन संभव है कि न्यायपालिका के भीतर ऐसे और भी न्यायाधीश हों जो पारंपरिक 'दूरी' की छवि से आगे बढक़र संयमित संवाद के माध्यम से समाज को समझना चाहते हों। यदि आने वाले समय में न्यायाधीश अदालत के भीतर कानून के प्रति उतने ही सख्त रहें, जितने अब तक रहे हैं और अदालत के बाहर समाज से सीमित लेकिन संतुलित संपर्क बनाए रखें तो यह परिवर्तन न्यायपालिका की कमजोरी नहीं बल्कि उसकी सामाजिक समझ का विस्तार होगा। ऐसा संतुलन अपनाने से न्यायपालिका की गरिमा कम नहीं होगी बल्कि उसके प्रति आम नागरिक के भरोसे को और गहरा करेगी।(युवराज फीचर्स)

केजरीवाल को राहत, कांग्रेस की आफत

वैसे देखा जाए तो अगर केजरीवाल निर्दोष हैं तो उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है, क्योंकि उन्हें इस मामले में 150 दिन और उनके सहयोगी सिसोदिया को 500 दिन जेल में रहना पड़ा है। इतने बड़े नेताओं का जेल में रहना उनके राजनीतिक जीवन के लिए अच्छा नहीं होता है। बरी होने के बाद केजरीवाल अपने आपको पीड़ति की तरह पेश कर रहे हैं जिसमें कुछ भी गलत नहीं है। जहां तक केजरीवाल के खिलाफ राजनीति करने की बात है तो भाजपा और कांग्रेस ने उन्हें इस मामले में कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की है।

राजेश कुमार पासी

शराब घोटाले में ट्रायल कोर्ट ने केजरीवाल को बरी कर दिया है। इसके बाद केजरीवाल घूम-घूम कर सारे देश को बता रहे हैं कि वो कट्टर ईमानदार हैं. भाजपा ने उन्हें फंसाया था। वैसे देखा जाए तो अदालत ने उन्हें बरी इसलिए किया है, क्योंकि जांच एजेंसी सीबीआई उनके खिलाफ लगे आरोप सिद्ध नहीं कर पाई। अदालत ने कहीं नहीं कहा है कि केजरीवाल ईमानदार हैं और उन्हें फंसाया गया है। एक तरह से अदालत ने उनके खिलाफ पूरे सबूत न पेश कर पाने के कारण उन्हें बरी किया है। अदालत ने यह भी नहीं कहा है कि घोटाला नहीं हुआ है, इसलिए सवाल यही है कि घोटाला किसने किया है। सीबीआई का मुख्य आरोप ये था कि शराब व्यापारियों को फायदा पहुंचाने के लिए उनके पक्ष में नीतियां बनाई गई थी और इससे राजस्व की हानि हुई। ये आरोप भी भाजपा या कांग्रेस ने नहीं लगाया था, बल्कि कैग द्वारा लगाया गया था। कैग की रिपोर्ट आने के बाद जब विपक्षी दलों ने शोर मचाया तो केजरीवाल सरकार ने शराब नीति वापिस ले ली ।

सवाल यह है कि अगर केजरीवाल सरकार को अपनी नीतियों पर भरोसा था तो उसने इन नीतियों को वापस क्यों लिया। अदालत में अपराध साबित न हो पाना जांच एजेंसी की नाकामी होती है, इसलिए इस मामले ने सीबीआई की साख पर सवाल खड़े कर दिए हैं। सीबीआई की नाकामी ने विपक्षी दलों को मोदी सरकार के खिलाफ राजनीतिक हथियार दे दिया है कि वो ईडी और सीबीआई का दुरुपयोग कर रही है। अगर केजरीवाल बिल्कुल निर्दोष थे तो उन्हें हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट जमानत क्यों नहीं दे रहे थे। अगर केजरीवाल के खिलाफ कोई सबूत नहीं था तो अदालतों द्वारा उन्हें जेल क्यों भेजा गया। अब केजरीवाल मोदी सरकार पर आरोप लगा रहे हैं कि उसने उन्हें जेल भेजा था। भारतीय व्यवस्था का सच यह है कि सरकार किसी के खिलाफ मुकदमा कर सकती है लेकिन उसे जेल नहीं भेज सकती। किसी भी व्यक्ति को जेल भेजने या जमानत देने का अधिकार सिर्फ इस देश की अदालतों के पास ही है। अदालत ने चार्जशीट तैयार करने वाले जांच अधिकारी के खिलाफ विभागीय कार्यवाही की सिफारिश की है। इसका मतलब है कि अदालत मानती है कि जांच अधिकारी की लापरवाही के कारण किसी निर्दोष को परेशान किया गया है या दोषी के खिलाफ मामला साबित नहीं हो पाया है।

वैसे देखा जाए तो अगर केजरीवाल निर्दोष हैं तो उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है, क्योंकि उन्हें इस मामले में 150 दिन और उनके सहयोगी सिसोदिया को 500 दिन जेल में रहना पड़ा है। इतने बड़े नेताओं का जेल में रहना उनके राजनीतिक जीवन के लिए अच्छा नहीं होता है। बरी होने के बाद केजरीवाल अपने आपको पीड़ति की तरह पेश कर रहे हैं जिसमें कुछ भी गलत नहीं है। जहां तक केजरीवाल के खिलाफ राजनीति करने की बात है तो भाजपा और कांग्रेस ने उन्हें इस मामले में कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की है। कांग्रेस कई बार अपनी राजनीति के कारण उनके साथ खड़ी हुई है लेकिन विरोध भी करती रही है। यही कारण है कि केजरीवाल बरी होने के बाद भाजपा के साथ-साथ कांग्रेस के खिलाफ भी बयान दे रहे हैं। कांग्रेस भी केजरीवाल के बरी होने के बाद भाजपा पर हमलावर है कि वो विपक्षी दलों के खिलाफ ईडी और सीबीआई का दुरुपयोग कर रही है। कांग्रेस का भाजपा पर हमलावर होना समझ आता है लेकिन कांग्रेस केजरीवाल के खिलाफ भी हमलावर है। कांग्रेस आरोप लगा रही है कि केजरीवाल और भाजपा मिलकर उसके खिलाफ साजिश कर रहे हैं। कांग्रेस का कहना है कि ऐन चुनाव के वक्त केजरीवाल का बरी होना महज संयोग नहीं हो सकता. कहीं न कहीं दोनों दलों की इसमें मिलीभगत है। कांग्रेस का कहना है कि भाजपा उसके खिलाफ आम आदमी पार्टी को खड़ा कर रही है, ताकि आने वाले विधानसभा चुनावों में उसे नुकसान पहुंचाया जा सके।

अगले साल पंजाब, गोआ और गुजरात में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जहां आम आदमी पार्टी गंभीरता से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही है। केजरीवाल और सिसोदिया के बरी होने के बाद पार्टी में नई जान आ गई है। आप के कार्यकर्ताओं में नया जोश आ गया है। देखा जाए तो अब पार्टी कार्यकर्ता और नेता नए जोश के साथ काम शुरू कर सकते हैं। केजरीवाल बोल रहे हैं कि भाजपा में हिम्मत है तो वो दिल्ली में चुनाव करवा ले. उसे दस सीटें भी नहीं मिलेंगी। वो ये जानते हैं कि दिल्ली में सरकार बने हुए एक साल हुआ है, ऐसा कुछ होने वाला नहीं है। वास्तव में वो कांग्रेस को इशारा कर रहे हैं। 2027 में जिन तीन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं, वहां आप भाजपा के लिए नहीं बल्कि कांग्रेस के लिए घातक साबित हो सकती है। आम आदमी पार्टी के मजबूत होने से भाजपा को नुकसान की अपेक्षा फायदा होने की उम्मीद ज्यादा है।

पंजाब में आम आदमी पार्टी अपनी सत्ता बचाने की लड़ाई लड़ रही है। इस समय पंजाब में सत्ताविरोधी लहर चल रही है जिससे निपटना पार्टी के लिए आसान होने वाला नहीं है। केजरीवाल के आरोपमुक्त होने के बाद आम आदमी पार्टी को सत्ता में वापिसी का रास्ता आसान लग रहा है। जहां तक भाजपा की बात है तो वो अभी सत्ता की लड़ाई में शामिल नहीं है। शिरोमणि अकाली दल भी इतना कमजोर हो चुका है कि वो सत्ता की लड़ाई से बाहर नजर आ रहा है। अगर भाजपा और अकाली दल गठबंधन कर लेते हैं, तो वो मुकाबले में आ सकते हैं लेकिन इसकी संभावना बहुत कम है। देखा जाए तो पंजाब में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ही मुख्य मुकाबले में हैं। भाजपा सिर्फ अपना जनाधार बढ़ा रही है। भाजपा को पता है कि अगर आम आदमी पार्टी दोबारा सत्ता में आ जाती है तो कांग्रेस पंजाब में कमजोर हो जाएगी और इसके बाद भाजपा को पांव जमाने का मौका मिल जाएगा। कांग्रेस इसलिए दोनों दलों पर मिलीभगत का आरोप लगा रही है। वैसे देखा जाए तो पंजाब की हालत देखते हुए आम आदमी पार्टी की सत्ता में वापसी आसान नहीं है। पार्टी के खिलाफ सत्ताविरोधी लहर इतनी मजबूत है कि केजरीवाल के बरी होने से ज्यादा फर्क पड़ने वाला नहीं है।

दूसरी बात यह है कि केजरीवाल भाजपा के कट्टर विरोधी हैं, इसलिए उनका भाजपा के साथ मिलीभगत करना मुश्किल लगता है। परिस्थितियों को देखते हुए आरोप सही लगें लेकिन जरूरी नहीं है कि वो सच हों। अभी चुनावों में एक साल बाकी है. तब तक राजनीति कभी भी करवट ले सकती है। पंजाब में बेशक सत्ताविरोधी लहर चल रही हो लेकिन कांग्रेस के पक्ष में कोई हवा नहीं चल रही है। जहां पंजाब की जनता आम आदमी पार्टी की सरकार से नाराज है तो दूसरी तरफ वो कांग्रेस से भी खुश नहीं है। पंजाब की जनता क्या फैसला देगी, इस बारे में अभी कुछ कहना आसान नहीं है। केजरीवाल और उनके कुछ नेताओं का पंजाब सरकार में बहुत ज्यादा दखल है जो कि पंजाब की जनता को पसंद नहीं आ रहा है। केजरीवाल के बरी होने के बाद इसमें बदलाव आने की उम्मीद नहीं है।

गोआ और गुजरात में भी आम आदमी पार्टी कांग्रेस के लिए समस्या खड़ी कर सकती है। गुजरात में दशकों से कांग्रेस सत्ता में वापसी की राह देख रही है जिसमें आम आदमी पार्टी नई बाधा बन कर खड़ी हो गई है। आम आदमी पार्टी के कारण ही पिछले चुनाव में कांग्रेस को बड़ी हार का सामना करना पड़ा था । यही हालत गोआ में भी है, जहां कांग्रेस को इस बार सत्ता में आने की उम्मीद है। गुजरात से कहीं ज्यादा उम्मीद कांग्रेस को गोआ से है, लेकिन यहां भी आप उसकी उम्मीदों पर पानी फेर सकती है। भाजपा चाहती है कि चुनाव त्रिकोणीय बन जाएं क्योंकि इससे उसे ही लाभ होता है। अगर आप गोआ में गंभीरता से चुनाव लड़ती है तो वो कांग्रेस के ही वोट लेगी. इससे भाजपा को बड़ा फायदा हो सकता है। सवाल यह है कि अगर आम आदमी पार्टी की ताकत बढ़ने से कांग्रेस को नुकसान होता है तो क्या आम आदमी पार्टी चुनाव लड़ना बंद कर दे। केजरीवाल की पार्टी पूरे देश में चुनाव लड़ती है, तो क्या वो कांग्रेस को नुकसान पहुंचाने के लिए ऐसा करती है। देखा जाए तो एक राजनीतिक दल होने के नाते देश में कहीं भी जाकर चुनाव लड़ना उसका लोकतांत्रिक अधिकार है, इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

आम आदमी पार्टी की राजनीति के लिए भाजपा को कसूरवार नहीं ठहराया जा सकता। केजरीवाल भाजपा के कट्टर विरोधी हैं. उससे मिलीभगत का आरोप उनकी विश्वसनीयता खत्म करने की कोशिश है। शराब घोटाले के आरोप से मुक्त होने पर उनकी विश्वसनीयता बढ़ी जरूर है लेकिन संदेह अभी भी बना हुआ है। उन पर केवल शराब घोटाले का आरोप नहीं है बल्कि कई आरोप लगे हुए हैं। अभी उन्हें कई मामलों में अदालतों का सामना करना है। इसके अलावा शराब घोटाले में सीबीआई उनके खिलाफ हाईकोर्ट के दरवाजे पर पहुंच गई है। कांग्रेस के आरोप राजनीति के लिए ठीक हो सकते हैं लेकिन इनका कोई ठोस आधार नहीं है। केजरीवाल के फायदे से आज कांग्रेस को नुकसान हो सकता है तो कल भाजपा के साथ भी ऐसा हो सकता है। कांग्रेस की आफत, कल भाजपा के लिए आफत बन सकती है। (युवराज फीचर्स)

दुर्गा सी तलवार उठाए, राक्षसों का संहार करे।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

नारी शक्ति ,ज्योति जलाए जो दीप अंधेरों में,
माँ की गोद सी सहलाए, हर दर्द के घाव भरे।
सीता सी त्याग सिखाए, वनवास में भी मुस्काए,
दुर्गा सी तलवार उठाए, राक्षसों का संहार करे।
खेतों में बहाए पसीना, घर को स्वर्ग बनाए जो,
स्कूल में सपने संवारे, बेटियों संग उड़ान भरे।
थके नहीं वो दौड़ दौड़ कर घर का सारा कम करे,
छुट्टी हो या इतवार बेचारी न फ़िर भी विश्राम करे।
रइंदिरा सी अडिग रहे, विश्व पटल पर झुक न पाए,
रलतारसी स्वरों को बाँध ले,करोड़ों दिल पर राज करे।
होली रंगों में बने राधिका ,गरबे में संग संग नृत्य करे,
योग आसन सिखलाए,आयुर्वेद का अमृत पान करे।
संघर्ष की अग्नि में तपे,बने जो सोना शक्ति अपार करे,
जहाँ नारियों की पूजा होती ,वहाँ देव भी निवास करें।
नारी शक्ति शाश्वत,अमर रहे प्रण ये मुश्ताक करे,
भारत माँ की कोख से जन्मी, ज्योति ,चारों ओर करे।

प्रख्यात साहित्यकारों को मिला 'कुशवासी महोत्सव–2026' का आमंत्रण

लोक संस्कृति के महाकुंभ में करेंगे सहभागिता

नई दिल्ली, 5 मार्च। लोक कला, संस्कृति और परंपरा के संरक्षण को समर्पित 'कुशवासी महोत्सव–2026' में देश के प्रख्यात साहित्यकारों को विशेष आमंत्रण प्राप्त हुआ है। वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर एवं अंतरराष्ट्रीय लेखक–पत्रकार डॉ. शंभू पंवार, सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' तथा साहित्यकार डॉ. सत्यवीर निराला इस महोत्सव में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएंगे।

यह तीन दिवसीय महोत्सव 29 से 31 मार्च तक गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के मेला मैदान, भस्म कुशवासी में आयोजित किया जाएगा। आयोजन धराधाम इंटरनेशनल, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति विभाग, गोरखपुर) तथा राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न होगा।

31 मार्च को आयोजित मुख्य समारोह में सहभागिता हेतु धराधाम इंटरनेशनल के प्रमुख, सौहार्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पाण्डेय ने दिल्ली प्रवास के दौरान प्रख्यात साहित्यकारों को औपचारिक आमंत्रण प्रदान किया। इस अवसर पर माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य एवं शिक्षाविद डॉ. एहसान अहमद भी उपस्थित रहे।उल्लेखनीय है कि डॉ. शंभू पंवार, जो संत गाडगे विश्व कल्याण सिद्ध पीठ, हरिद्वार के संरक्षक के रूप में भी विख्यात हैं, तथा डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत', जो साहित्य और सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, महोत्सव में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विमर्श में सहभागिता करेंगे।देशभर से साहित्यकारों, विद्वानों और कलाकारों की उपस्थिति से यह सांस्कृतिक महाकुंभ क्षेत्रीय लोक कला, सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा तथा राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता का सशक्त संदेश देगा।

डॉ.सौरभ का जीवन पाठयपुस्तकों में

इस अवसर पर संत डॉ.सौरभ ने उनके विचारों एवं सामाजिक योगदान पर आईसीएसइ पाठ्यक्रम में प्रेरक पाठ कक्षा 8 की सामान्य हिंदी में, एवं माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तरप्रदेश की कक्षा 12 की सामान्य हिंदी पुस्तक में गद्यांश और पद्यांश लिखे गए है। उक्त दोनों पुस्तके भी भेंट की।

(8 मार्च — अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेष) : महिलाओं के लिए रोल मॉडल और प्रेरणा-स्रोत हैं विश्व बैंक की वरिष्ठ अर्थशास्त्री डॉ. एस. अनुकृति

महिलाओं के लिए रोल मॉडल और प्रेरणा-स्रोत हैं विश्व बैंक की वरिष्ठ अर्थशास्त्री डॉ. एस. अनुकृति

(अपनी शिक्षा के दौरान भारत सरकार का नेशनल अवार्ड, अमेरिका की जीई फंड स्कॉलरशिप, विकरी और हैरिस अवार्ड तथा कोलंबिया विश्वविद्यालय की रिसर्च स्कॉलरशिप प्राप्त करने वाली डॉ. एस. अनुकृति को वर्ल्ड इकोनॉमेट्रिक सोसाइटी का प्रथम यंग रिसर्चर अवार्ड भी प्राप्त हो चुका है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, बोस्टन (अमेरिका) की फैलो रह चुकी डॉ. अनुकृति वर्तमान में कोलंबिया यूनिवर्सिटी, मैनहैट्टन (अमेरिका) तथा इंस्टीट्यूट ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स, बोन (जर्मनी) की फैलो हैं। भारत और अमेरिका के अतिरिक्त कनाडा, पेरू, पोर्टोरिको, बरमूडा, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्वीडन, चीन, हांगकांग, सिंगापुर, बंग्लादेश, केन्या और इथोपिया सहित बीस से अधिक देशों की यात्रा कर चुकी हैं। डॉ. अनुकृति डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स की विशेषज्ञ हैं तथा लगभग डेढ़ दशक पूर्व, विश्वबैंक की सलाहकार रहते हुए, लैंगिक समानता, विश्व में महिलाओं की आर्थिक स्थिति, महिलाओं की अशिक्षा और पिछड़ापन, बाल-कुपोषण आदि अनेक विषयों पर कार्य कर चुकी हैं। विगत दो दशकों से अमेरिका में रह रही डॉ. अनुकृति भले ही अब अमेरिकी नागरिक बन चुकी हैं, किंतु अपने जन्म-स्थान नारनौल (हरियाणा) और अपने मूल देश भारत तथा भारत की मिट्टी से इनका अब भी गहरा लगाव है।

-डॉ. प्रियंका सौरभ

डॉ. अनुकृति को देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि साधारण-सी दिखने वाली यह युवा महिला विश्व बैंक, वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) में वरिष्ठ अर्थशास्त्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित डॉ. एस. अनुकृति हैं। लेकिन यह सच है। विश्व बैंक में बतौर अर्थशास्त्री ज्वाइन करने के साथ ही डॉ. अनुकृति विश्व की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने वाली इस सर्वोच्च बैंकिंग संस्था की दस सदस्यीय मानव संसाधन समिति की सदस्य भी बन गई थीं। वर्तमान में यह विश्व बैंक के 'सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन एंड जॉब्स' की सह-अध्यक्ष, पीएफ-इंपेक्ट कंसोर्टियम के टेक्निकल एडवाइजरी ग्रुप की सदस्य तथा 'डेवलपमेंट इंपैक्ट ब्लॉग' की सक्रिय योगदानकर्ता के साथ-साथ बंग्लादेश बेस्ड सोशल साइंस रिसर्च इंस्टीट्यूट 'ब्राक इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड डिवेलपमेंट' की दो समितियों 'वी-डिफाइन' और 'वी-कॉनेक्ट' की सदस्य भी हैं। इससे पूर्व, सात वर्षों तक बीसी यूनिवर्सिटी, बोस्टन (अमेरिका) में अर्थशास्त्र की प्रोफ़ेसर रही डॉ. अनुकृति के पति सिद्धार्थ रामलिंगम भी हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर और विश्व बैंक में सीनियर कंसल्टेंट रह चुके हैं तथा वर्तमान में वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) बेस्ड एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में स्ट्रैटजिक और प्लानिंग मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं।

डॉ. अनुकृति साधारण होकर भी असाधारण हैं। अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण यह आज युवाओं और विशेष रूप से महिलाओं के लिए रोल मॉडल तथा प्रेरणा-स्रोत बन चुकी हैं। डॉ. अनुकृति बचपन से ही बड़ी मेधावी और विलक्षण रही हैं। इन्होंने अपने माता-पिता से न कभी एक रुपया जेबखर्च लिया और न ही कभी सड़क पर खड़े होकर किसी ठेली-रेहड़ी वाले से कुछ खरीदा-खाया। एक दिन भी ट्यूशन नहीं किया, फिर भी, सीबीएसई की 10+2 (नॉन मेडिकल) परीक्षा में 94.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया। डॉ. अनुकृति का जन्म हरियाणा के नारनौल शहर में हुआ, लेकिन अठारह वर्ष हिसार में और सात वर्ष दिल्ली में रहीं; अब बीस वर्षों से अमेरिका जैसे विश्व के सर्वाधिक विकसित और संपन्न देश में रह रही हैं। लेकिन दिखावा या आडंबर इन्हें छू तक भी नहीं पाया है। गर्मी हो या सर्दी, भारत आते ही यहाँ के परिवेश के अनुरूप ढल जाती हैं। दो दशकों से हवाई जहाज से

सफर कर रही हैं, बीस से अधिक देशों की यात्रा कर चुकी हैं, लोकल में भी मैट्रो या एसी बस से जाती-आती हैं, लेकिन साइकिल के अतिरिक्त एक्टिवा तक इन्हें चलानी नहीं आती।

वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद् डॉ. रामनिवास 'मानव' तथा अर्थशास्त्र की पूर्व प्रवक्ता डॉ. कांता भारती की लाडली बेटी तथा जन्मजात विशिष्ट प्रतिभा की धनी डॉ. अनुकृति की उपलब्धियाँ वैश्विक स्तर की रही हैं। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से बीए इकोनॉमिक्स (ऑनर्स) और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से एमए (इकोनॉमिक्स) करने के उपरांत विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक कोलंबिया यूनिवर्सिटी, मैनहैट्टन (अमेरिका) से एमए (इकोनॉमिक्स), एमफिल और पीएचडी की तीन उपाधियाँ एकसाथ प्राप्त कीं।

पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहने वाली डॉ. अनुकृति ने विश्वस्तरीय संस्थानों से शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन अन्य विद्यार्थियों की भाँति इन्हें प्रवेश लेने में कभी कोई कठिनाई नहीं हुई। 10+2 तक की शिक्षा हिसार के स्कूलों से प्राप्त करने के उपरांत इन्होंने बीए इकोनॉमिक्स (ऑनर्स) दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से किया। तत्पश्चात दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एमए (अंतरराष्ट्रीय संबंध), दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में एमए (अर्थशास्त्र) और इंडियन स्टेटिस्टिकल इंस्टीट्यूट में एमए (गणित) हेतु आवेदन किया और तीनों में ही इनका चयन हो गया। इनमें से दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स को इन्होंने चुना। यही नहीं, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से एमए (अर्थशास्त्र) करने के बाद पीएचडी हेतु इन्होंने अमेरिका के छह अग्रणी विश्वविद्यालयों- रोचेस्टर, ब्राउन, विसकोंसिन मेडिसिन, कोलंबिया, न्यूयॉर्क और मेरीलैंड में आवेदन किया और सभी छह विश्वविद्यालयों में इनका चयन हो गया। डॉ. अनुकृति ने कोलंबिया यूनिवर्सिटी, मैनहैट्टन (न्यूयॉर्क) को चुना और वहाँ से एमए (इकोनॉमिक्स), एमफिल और पीएचडी की तीन उपाधियाँ एक साथ प्राप्त कीं। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि पीएचडी करने के बाद अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, स्वीडन, आस्ट्रेलिया और भारत सहित छह देशों के सत्रह विश्वविद्यालयों या समतुल्य संस्थानों में इनकी नियुक्ति हो गई, जिनमें से बीसी यूनिवर्सिटी को इन्होंने ज्वाइन किया। आर्थिक दृष्टि से डॉ. अनुकृति कभी अपने माता-पिता पर बोझ नहीं बनीं। शिक्षा और शोधकार्य के दौरान इन्हें अमेरिका की जीई फंड स्कॉलरशिप, विकरी और हैरिस जैसे अवार्ड तथा कोलंबिया यूनिवर्सिटी रिसर्च स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। कोलंबिया यूनिवर्सिटी के 6-वर्षीय पीएचडी प्रोग्राम के दौरान तो इन्हें अपने माता-पिता से एक रुपए की भी आर्थिक सहायता नहीं लेनी पड़ी।

डॉ. अनुकृति कहती हैं कि मैं अपने सफर को कठिन तो नहीं कहूँगी, किंतु आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो लगता है, हरियाणा के एक छोटे-से पिछड़े शहर से विश्व बैंक तक का सफ़र कम ही लोग तय कर पाते हैं, विशेषकर लड़कियों और महिलाओं के लिए भारत के कई राज्यों में अपनी पढाई और करियर को प्राथमिकता देना आसान नहीं है। किंतु मेरे परिवार के सहयोग और प्रोत्साहन के कारण मुझे इस प्रकार की किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। मेरे माता-पिता ने मेरी और मेरे भाई (जो भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी बने) की परवरिश इस प्रकार से की थी कि हमें कभी यह नहीं लगा कि हमारे लक्ष्य या आकांक्षाएँ केवल अपने शहर, राज्य या देश तक ही सीमित रहें। प्रारंभ में हरियाणा के एक छोटे शहर से दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज जाने में मुझे शायद अधिक अंतर अनुभव हुआ और समायोजन करने में कुछ समय लगा। किंतु बाद में मेरे लिए आगे का सफर अधिक मुश्किल नहीं रहा। अतः मैं माता-पिता और अभिभावकों से यही कहना चाहूँगी कि अपने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा का निर्णय बहुत सोच-विचारकर करें, क्योंकि उसका प्रभाव उनके पूरे जीवन और कैरियर पर पड़ता है। अपनी रुचि बच्चों पर न थोपें, बच्चों की रुचि का भी ध्यान रखें; अपना रास्ता और मंजिल उन्हें स्वयं तय करने दें। माता-पिता की रुचि बच्चों के व्यक्तित्व-विकास में सर्वाधिक बाधक है। सभी माता-पिता अपने बच्चों को डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते हैं, जो उचित नहीं है। अन्य अनेक क्षेत्र हैं, जिनमें बच्चों को अपनी इच्छा और रुचि से जाने की छूट दी जाये, तो वे भी विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। हाँ, माता-पिता का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन बच्चों के लिए बहुत आवश्यक है। मुझे नहीं लगता कि अपने माता-पिता के मार्गदर्शन के बिना मैं इतना-कुछ प्राप्त कर पाती। मेरे माता-पिता और अन्य परिजनों ने कभी मेरे और मेरे भाई के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया और न ही कभी मुझ पर छोटी उम्र में शादी करने और अपने करियर पर कम ध्यान देने का दबाव डाला। मुझे बचपन में हमेशा पढ़ने और सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया; घर के काम-काज का भार भी मुझ पर कभी नहीं डाला गया। अब मेरे पति प्रो. सिद्धार्थ रामलिंगम का भी मुझे पूरा सहयोग प्राप्त है; हम दोनों मिलकर, बराबरी से, एक-दूसरे के निर्णयों और कैरियर्स को सपोर्ट करते हैं। हमारी एक नन्ही बिटिया मिली (मृणालिनी) है, जिसने हमारे जीवन को खुशियों से भर दिया है।

सचमुच बहुत गर्व है पूरे भारत को, अपनी सुयोग्य और मेधावी बेटी डॉ. एस. अनुकृति पर। आज की युवा पीढ़ी इनसे बहुत कुछ सीख सकती है, इनसे प्रेरणा प्राप्त कर न केवल अपना भविष्य सँवार सकती है, बल्कि देश-विदेश में अपनी कीर्ति-पताका भी फहरा सकती है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

जमशेदपुर की 53 वर्षीया पर्वतारोही दीप्ति खेमानी ने माउंट किलिमंजारो में फतह की

बेटा व बहू करते रहे प्रेरित , तंजानिया नेशनल पार्क्स ने आधिकारिक पर्वतारोही प्रमाण पत्र देकर नवाजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, उम्र कुछ भी हो वशर्ते साहस अदम्य हो, इच्छा शक्ति हो तो मंजिल दुर नहीं होती । इन्ही सबक परिचय देते हुए जमशेदपुर की दीप्ति खेमानी ने विश्व के सबसे ऊँचे स्वतंत्र खड़े पर्वत माउंट किलिमंजारो को फतह कर शहर का नाम रोशन किया है। 53 वर्ष की उम्र में इस कठिन पर्वतारोहण को सफलतापूर्वक पूरा कर उन्होंने साहसिक खेलों की दुनिया में एक प्रेरणादायक उदाहरण पेश किया है।

दीप्ति खेमानी ने 27 फरवरी 2026 को सुबह 7:45 बजे समुद्र तल से 5,895 मीटर की ऊँचाई पर स्थित उहुरू पीक पर पहुँचकर माउंट किलिमंजारो की चोटी को छुआ। इस उपलब्धि के लिए तंजानिया नेशनल पार्क्स की ओर से उन्हें आधिकारिक पर्वतारोहण प्रमाणपत्र भी जारी किया गया है।

सीएच एरिया की निवासी और दो बच्चों की माँ दीप्ति खेमानी ने बताया कि उन्हें साहसिक गतिविधियों की ओर प्रेरणा भारत की वरिष्ठ पर्वतारोही प्रेमलता अग्रवाल से मिली, जो माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली भारत की सबसे उम्रदराज महिला हैं। उन्होंने बताया कि शुरुआत में यह उनके लिए केवल एक शौक था, लेकिन धीरे-धीरे यह जुनून बन गया और उन्होंने माउंट किलिमंजारो को फतह करने का लक्ष्य तय किया।

तंजानिया में स्थित माउंट किलिमंजारो दुनिया के सबसे लोकप्रिय ट्रेकिंग स्थलों में से एक माना जाता है। इसकी कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ और अधिक ऊँचाई पर्वतारोहियों की शारीरिक क्षमता, मानसिक दृढ़ता और सही अनुकूलन क्षमता की कड़ी परीक्षा लेती है

दीप्ति ने कहा, "मेरे पति प्रकाश खेमानी, जो पेशे से बिज़नेसमैन हैं, मेरा बेटा ओजस्वी, बहू ईवा और बेटी विदुषी हमेशा मेरा साथ देते रहे हैं। उन्होंने हमेशा मुझे होममेकर होने के अलावा एडवेंचर करने के लिए मोटिवेट किया है।"

53 वर्ष की उम्र में इस उपलब्धि को हासिल करने पर शहर के लोगों और साहसिक खेलों के शौकीनों ने दीप्ति की सराहना की है। उनका कहना है कि यह उपलब्धि हर आयु वर्ग के लोगों के लिए प्रेरणादायक है और यह दिखाती है कि दृढ़ निश्चय के साथ कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। जमशेदपुर के एडवेंचर प्रेमियों का कहना है कि दुनिया की प्रतिष्ठित चोटियों में से एक माउंट किलिमंजारो पर चढ़ाई करना आसान नहीं होता। इसके लिए कई सप्ताह की तैयारी, कठोर प्रशिक्षण और मजबूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।

दीप्ति खेमानी की इस उपलब्धि से खासकर महिलाओं और मध्यम आयु वर्ग के लोगों को प्रेरणा मिलेगी कि सपनों को पूरा करने और नई ऊँचाइयों को छूने के लिए उम्र कभी बाधा नहीं बनती।

नीतीश कुमार का राज्यसभा जाना : बिहार की राजनीति के लिए संकेत या नया मोड़? डॉ. विक्रम चौरसिया

परिवहन विशेष न्यूज

बिहार के यशस्वी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा राज्यसभा के लिए नामांकन ने राज्य की राजनीति में नई बहस को जन्म दिया है। लंबे समय तक बिहार की राजनीतिक धुरी रहे नेता का सक्रिय राज्य नेतृत्व से राष्ट्रीय राजनीति की ओर संभावित प्रस्थान केवल एक औपचारिक राजनीतिक निर्णय नहीं, बल्कि भविष्य की सत्ता संरचना और नेतृत्व संतुलन से जुड़ा महत्वपूर्ण संकेत माना जा रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस कदम का प्रभाव जेडीयू की संगठनात्मक स्थिति और बिहार के बदलते राजनीतिक समीकरणों पर पड़ सकता है। वहीं मुख्यमंत्री जी के पुत्र निशांत कुमार को लेकर तेज होती चर्चाओं ने संभावित नेतृत्व परिवर्तन को लेकर राजनीतिक अटकलों को और बल दिया है।

बिहार की जनता ने स्थिर शासन, विकास और सामाजिक संतुलन की अपेक्षा के साथ बार-बार जनादेश दिया है। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि किसी भी बड़े राजनीतिक परिवर्तन को जनभावना, जवाबदेही और लोकतांत्रिक पारदर्शिता के संदर्भ में देखा जाए। दल के कार्यकर्ताओं या जनप्रतिनिधियों की चिंता भी लोकतंत्र में सहभागिता और संवाद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानी जानी चाहिए।

वास्तव में यह क्षण केवल सत्ता परिवर्तन की चर्चा का नहीं, बल्कि बिहार की भावी राजनीति की दिशा तय करने का है। लोकतंत्र की स्थिरता व्यक्तियों से नहीं, बल्कि जनता के विश्वास, संस्थागत मजबूती और पारदर्शी नेतृत्व पर निर्भर करती है। आने वाला समय तय करेगा कि यह निर्णय राजनीतिक पुनर्संरचना का अवसर बनेगा या नए विमर्शों की शुरुआत।

चिंतक। मेंटर। एक्टिविस्ट
दिल्ली विश्वविद्यालय

वृक्षारोपण के नाम कागजी घोड़ा दौड़ाने से गजराज कुपित , कोल्हान रक्षा संघ नाराज

जनवरी माह में बीस लोगों को कोल्हान में हाथी ने मारा, वृक्षारोपण समेत वन विभाग मे भ्रष्टाचार की कारवाई करायेगा संघ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, गत दिनों कोल्हान प्रमंडल के पश्चिमी सिंहभूम के के अंदर हाथियों के हमले से मारे गये बीस आदिवासियों की मृत्यु को कोल्हान रक्षा संघ ने आड़े हाथ लिया है। संघ ने कहा है कि पहले सिंहभूम, चाकुलिया , मानगो, दलमा , खरसावां सरायकेला के वनों और उसके उजाड़ पर विभागीय क्रिया कलाप की जांच कराना जरूरी है। जहां जल ,जंगल जमीन के लिये लड़ रहे आदिवासी क्यों मौत के मूंह में ढकेले जाते इसपर अविलम्ब पर्दा उठनी चाहिए । विभाग इस दरम्यान कितने बृक्ष लगायें और पर्यावरण संरक्षण दिशा में कितना काम किया इस पर हाथी एवं एवं वन्य प्राणी इसके सबूत देगें।

संघ के वरीय पदाधिकारी व पर्यावरण के प्रति जागरूक पत्रकार ने जानना चाहा है का समुचा कोल्हान में विगत 10 वर्षों में कितने वृक्षारोपण हुए है सबसे पहले विभाग सत्यापित करें फिर विभाग का हकीकत पर संघ करायेगा जांच। कारण यह मामला ग्लोबल वार्मिंग से शान्त करने तथा पर्यावरण से जूड़ा न केवल झारखंड वल्कि देश दुनिया का मुद्दा है । हाथियों के निमित्त विगत एक दशक में बांस ,पीपल , बरगद, केला , कटहल कितने कहां कहां लगाये गये उसकी सत्यता क्या है सबके सामने आना चाहिए ।

कोल्हान रक्षा संघ ने गत जनवरी में इंसान एवं हाथीयों के बीच हुई लड़ाई को पर महत्वपूर्ण सवाल खड़े कर दिये है । जब जंगल लगाया ही नहीं गया तो जंगल के भूखें हाथियों का लोगों के फसल और गांव के तरफ आना लाजमी था, जिसका परिणाम 20 लोग प्राण गंवाये है सारंडा में गत जनवरी में। दुसरे शब्दों में लोगों को मौत के मूंह पर ढकेला गया है करतूत के कारण । वन विभाग में बड़े स्तर पर धांधली चलती है जिसमें नीचे से लेकर ऊपर तक के अधिकारी शामिल बतायें जाते हैं ।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अकेले कोल्हान में करीब 50 रेंजरों का पद श्रृजित बताया जाता है जबकि मात्र 6 कार्यरत हैं । कुछ तो ऐसे हैं जो अपनी सेवा विस्तार कर पाच छह जगहों के पदों पर काबिज बतायें जाते हैं । जितने नैतिक अनैतिक काम हो रहे रहे हैं इस पर उच्चस्तरीय जांच अत्यावश्यक है । कारण जंगल पर्यावरण के साथ जूड़ा वैश्विक धरोहर है । संघ के साथ इस पर एक जागरूक वर्ग का ध्यान हमेशा रहता आया है । यह औधोगिक व खनीज संपदा भरा जिला है जहां पर्यावरण संरक्षण लाजमी है । बताया जाता है कि नये रेंजरों की परीक्षा हो चुकी है पर सरकार उसकी रिजल्ट घोषित करने में देर कर रही है जो सिस्टम को कटघरे में खड़ा कर रहा है ।

भेदभाव के दौर में न्याय व्यवस्था की चुनौती- डॉ. विक्रम चौरसिया

परिवहन विशेष न्यूज

प्रख्यात हिंदी साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु का यह विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक है कि समाज को मानवीय और मनुष्य को सामाजिक बनाना ही वास्तविक मुक्ति का मार्ग है। किंतु विडंबना यह है कि आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के बावजूद न्याय तक समान पहुँच आज भी एक गंभीर सामाजिक चुनौती बनी हुई है।

किसी भी लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति उसकी न्याय व्यवस्था में निहित होती है। न्याय केवल कानूनों के अस्तित्व से नहीं, बल्कि उनके निष्पक्ष, पारदर्शी और समान क्रियान्वयन से स्थापित होता है। जब पद, प्रभाव अथवा आर्थिक सामर्थ्य न्याय प्रक्रिया को प्रभावित करती प्रतीत होती है, तब आम नागरिक का विश्वास व्यवस्था से डगमगाने लगता है।

व्यवहारिक स्तर पर अनेक बार यह अनुभव किया जाता है कि सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित नहीं हो पाता। कई परिस्थितियों में पीड़ित व्यक्ति को अपनी शिकायत दर्ज कराने तक संघर्ष करना पड़ता है, जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित समानता के मूल सिद्धांत के विपरीत है। न्याय यदि सहज अधिकार के स्थान पर जटिल और दबावपूर्ण प्रक्रिया बन जाए, तो समाज में अविश्वास का वातावरण उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

प्रकृति स्वयं समानता का संदेश देती है। मनुष्य जीवन की शुरुआत समान जैविक परिस्थितियों से करता है और अंततः सभी को मिट्टी में ही विलीन होना है। जब जीवन और मृत्यु का सत्य सबके लिए समान है, तब आर्थिक, सामाजिक अथवा जातिगत भेदभाव का औचित्य स्वतः प्रश्नों के घेरे में आ जाता है।

समय की मांग है कि प्रशासनिक पारदर्शिता, संवेदनशील न्याय प्रणाली और सामाजिक जागरूकता को सुदृढ़ किया जाए, ताकि न्याय किसी वर्ग का विशेषाधिकार न रहकर प्रत्येक नागरिक का वास्तविक अधिकार बन सके। एक स्वस्थ और सशक्त लोकतंत्र वही है, जहाँ न्याय भय का नहीं बल्कि विश्वास और समानता का प्रतीक बने।

देवयुग परिवार ने होली उत्सव मनाया

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वरः देवयुग परिवार ने एकामरा विधानसभा क्षेत्र में होली उत्सव मनाया। होली का खेल मथुरा के भगवान राधा कृष्ण के समय से मनाया जा रहा है। होली भाईचारे का त्योहार है। हम होली खेलते हैं और दोस्ती बढ़ाते हैं। होली इसका स्रोत और लक्ष्य है। इसीलिए हमने एकामरा विधानसभा क्षेत्र में 5 जगहों पर सभी के लिए मिठाई, खाना और रंग रखे हैं, देवयुग परिवार के देवव्रत नायक ने कहा। हम चाहते हैं कि लोग होली में नशा करें और रंग खेलें, इसलिए नशा छोड़ें और मिठाई खाएं। यह भाइयों की होली है, सभी अपना गुस्सा भूलकर होली खेलते हैं।

भुवनेश्वर में "न्याय संहिता एग्जीबिशन" लग रही है

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

नए क्रिमिनल लॉ और नए जस्टिस सिस्टम में हुए ऐतिहासिक बदलावों के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए, ओडिशा पुलिस एग्जीबिशन ग्राउंड, यूनिट-III, भुवनेश्वर में "न्याय संहिता एग्जीबिशन" लगा रही है।

इस एग्जीबिशन का उद्घाटन 6 मार्च, 2026 को माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह करेंगे। इस मौके पर ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी भी मौजूद रहेंगे। स्टेट सिक्योरिटी के डायरेक्टर जनरल श्री योगेश बहादुर खुरानिया ने मीडिया को बताया कि यह एग्जीबिशन 7 मार्च से 10 मार्च, 2026 तक लोगों के लिए खुली रहेगी।

भुवनेश्वर में पुलिस भवन में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, DGP ने कहा कि भारत सरकार द्वारा शुरू की गई भारतीय न्याय संहिता (BNS), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA) में बदलाव किया गया है। ये नए कानून 1 जुलाई 2024 से लागू हो गए हैं। DGP ने कहा कि इसके चलते, कॉलोनियल दौर में मौजूद "पेनल्टी" सिस्टम की जगह अब "जस्टिस" सिस्टम ने ले ली है।

नए कानून का मुख्य मकसद पीड़ितों के अधिकारों और सम्मान को प्राथमिकता देते हुए समय पर जांच और ट्रायल पक्का करना है।

DGP ने कहा, "देर से मिला न्याय, न्याय न मिलना है" — इस नियम का नए कानून में साफ तौर पर ज़िक्र किया गया है।

इसके अलावा, e-Sakshya के ज़रिए डिजिटल सबूत मैनेजमेंट, NAFIS (नेशनल ऑटोमेटेड फिंगरप्रिंट आइडेंटिफिकेशन सिस्टम) के ज़रिए बायोमेट्रिक पहचान, मोबाइल फोरेंसिक यूनिट, टेक्नोलॉजी से मदद वाली जांच प्रक्रिया वगैरह को एग्ज़िबिशन में डिटेल में दिखाया जाएगा।

इसके अलावा, DGP ने बताया कि एग्ज़िबिशन में "क्राइम सीन से लेकर हाई कोर्ट तक" पूरे जस्टिस सिस्टम को एक इंटीग्रेटेड और एजुकेशनल फ़ॉर्मेट में दिखाया जाएगा। DGP ने उम्मीद जताई कि होम मिनिस्ट्री से मंज़ूर 10 स्टॉल पर आम लोगों को क्राइम सीन, 112 इमरजेंसी मदद, पुलिस स्टेशन का काम, हॉस्पिटल कोऑर्डिनेशन, फोरेंसिक लैब, पब्लिक प्रॉसिक्यूशन, डिसट्रिक्ट कोर्ट, जेल और हाई कोर्ट के काम के बारे में जानकारी दी जाएगी।

नीतीश कुमार की नई सधी हुई बिहारी चाल के सियासी निहितार्थ

कमलेश पांडेय

बिहार के मुख्यमंत्री और जनता दल यूनाइटेड सुप्रीमो नीतीश कुमार राजनीति के मंजे हुए खिलाड़ी हैं। सियासत के चाणक्य श्री कुमार ने भाजपा के दबाव में नहीं, बल्कि अपनी केंद्रीय राजनीतिक संभावनाओं को उभारने के लिए दिल्ली कूच करने का अप्रत्याशित फैसला लिया है। भले ही उन्होंने राज्यसभा जाने का निर्णय बिहार की राजनीति में अपेक्षित एक बड़े बदलाव के हिस्से के रूप में लिया है, लेकिन यह भी उनकी लंबे समय से चली आ रही एक अधूरी इच्छा को प्रकट/पूरा करता है।

राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक, भाजपा के ओबीसीकरण के दृष्टिगत राष्ट्रीय स्तर पर सवर्णों की भाजपा नीत एनडीए से बेरुखी से उपजी सियासी परिस्थितियों का लाभ उठाने के लिए ही उन्होंने यह नया कदम उठाया है, जिसे एक तीर से कई निशाने के तौर पर देखा जाने लगा है। देश की समाजवादी राजनीति में भी अब उनका कोई निकट प्रतिद्वंद्वी नहीं बचा है। इसलिए गुरुवार, 5 मार्च 2026 को राज्यसभा की सदस्यता हेतु नामांकन दाखिल करने के साथ ही उनका अब नया भविष्य भी जुड़ा है।

समझा जाता है कि नीतीश कुमार की राज्यसभा सदस्यता की पुरानी ₹अधूरी हसरत₹ अब पूरी हो रही है, क्योंकि वे विधानसभा, विधान परिषद और लोकसभा तो रह चुके हैं, लेकिन राज्यसभा नहीं। वहीं, राज्यसभा सदस्य बनने के बाद राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, एक्सीडेंटल प्रधानमंत्री, उपप्रधामंत्री, उपसभापति, कद्दावर केंद्रीय मंत्री बनने की उनकी नई सम्भावनाएं बनेंगी। वहीं राष्ट्रीय राजनीति में अपनी भूमिका बढ़ाने के लिए भी उनका यह कदम देखा जा रहा है, जहां वे बिहार, सामाजिक न्याय और विकास मुद्दों पर प्रभाव डाल सकें।

राजनीतिक विश्लेषक भी मानते हैं कि भाजपा की सलाह पर यह निर्णय लिया गया लगता है, क्योंकि 2025 विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत के बाद बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी (89 सीटें) बन गई है। इससे बिहार में भाजपा का मुख्यमंत्री बनना आसान हो सकता है जबकि नीतीश के बेटे निशांत को डिप्टी सीएम बनाए जाने की चर्चा है। हालांकि, जदयू में उनके इस फैसले पर असंतोष है, लेकिन इसे उनका व्यक्तिगत निर्णय बताया जा रहा है।

वहीं विपक्ष इसे बीजेपी का ₹मास्क₹ हटाने का प्रयास मान रहा है। इससे राजद को पुनः सियासी ऑक्सीजन मिल सकता है। यूँ तो नीतीश कुमार के राज्यसभा जाने के बाद बिहार के नए मुख्यमंत्री की घोषणा अभी स्पष्ट रूप से नहीं हुई है, क्योंकि यह प्रक्रिया राज्यसभा चुनाव के परिणाम (16 मार्च 2026) के बाद शुरू होगी। एनडीए में बीजेपी का सबसे बड़ा दावा माना जा रहा है क्योंकि उनके पास 89 विधायक हैं।

हालांकि, संभावित उम्मीदवार के तौर पर सम्राट चौधरीः वर्तमान डिप्टी सीएम और भाजपा विधायक दल नेता, जिनकी दावेदारी सबसे मजबूत है। उनके पास गृह मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण विभाग हैं और राजनीतिक अनुभव समृद्ध है। वहीं, विजय कुमार सिन्हाः उपमुख्यमंत्री व पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, आक्रामक शैली के लिए जाने जाते हैं, लेकिन सम्राट से थोड़ा पीछे हैं। वहीं नित्यानंद रायः केंद्रीय मंत्री, BJP से प्रमुख नाम हैं, लेकिन नया चेहरा भी संभव है। इनमें दिलीप जायसवाल और संजीव चौरसिया के नाम प्रमुख हैं। अन्य चर्चाएंओं में नीतीश के बेटे निशांत कुमार को डिप्टी सीएम बनाए जाने की संभावना है, क्योंकि उनका कोई स्वतंत्र चुनावी आधार नहीं है।

जदयू नेता विजय चौधरी ने पुष्टि की कि भाजपा से ही मुख्यमंत्री बनेगा। यह बदलाव एनडीए की आंतरिक रणनीति का हिस्सा लगता है। इससे भी पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव प्रभावित होगा। वहीं, निशांत कुमार को डिप्टी सीएम बनाने का विचार मुख्य रूप से नीतीश कुमार की राजनीतिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए उठाया जा रहा है। वे लो-प्रोफाइल जीवन जीते रहे हैं, लेकिन पिता के राज्यसभा जाने के बाद जदयू में उनकी एंट्री तय मानी जा रही है।

जहां तक राजनीतिक रणनीति की बात है तो नीतीश के राष्ट्रीय स्तर पर जाने से बिहार में भाजपा को मुख्यमंत्री पद मिलेगा, जबकि निशांत को डिप्टी सीएम बनाकर जदयू का प्रभाव कायम रहेगा। हालांकि एनडीए की बैठक में इस पर मुहर लगने की चर्चा है, जो सत्ता समीकरण को संतुलित करेगी। वहीं निशांत अब तक सियासत से दूर रहे, लेकिन उनकी नियुक्ति पिता की लंबी राजनीतिक यात्रा को आगे बढ़ाने का प्रयास है। यह कदम जदयू कार्यकर्ताओं को एक नया चेहरा देकर पार्टी को मजबूत करने के उद्देश्य से है।

मजदुरों का शोषण सरायकेला का बड़ा मुद्दा, सुधर जायें भ्रष्ट अधिकारी : कोल्हान रक्षा संघ

उद्योगों में न्यूनतम मजदूरी नहीं देने पर उठाया जायेगा बड़ा कदम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

आदित्यपुर, इलाके की अस्तित्व एवं जनजीवन को लेकर लड़ रहा सिंहभूम का सर्व वृहत संगठन कोल्हान रक्षा संघ सरायकेला खरसावां जिले का औद्योगिक क्षेत्र में मजदुरो को न्यूनतम मजदूरी तक नहीं देने को लेकर अपने परिचर्चा में जोरदार प्रहार कर मजदुरों को न्याय दिलायेगा । एक तरफ जहां सिंहभूम इलाका माओवाद ग्रसित है वहीं उद्योगपतियों के जरिये औने पौने दामों में जमनी लेने एवं लोगों को न्यूनतम मजदूरी तक न देने का मामला झारखंड की दिशा और दशा पर बहुत कुछ कहता है । जिसपर भ्रष्टाचार का अध्ययन, दंड तथा समाधान होना समय की पुकार संघ ने माना है । अकेले आदित्यपुर मे 1200 उद्योग बसे हैं जहां उनके 95 फीसदी लेवर सप्लायर बाहरी है। इसके अलावे दुसरे क्षेत्र में भी अनेक इंडस्ट्री है जहां मजदुरों शोषण सरेआम है । न्यूनतम मजदुरी देने में अधिकारी किस प्रकार दोषी उद्योगपतियों को लेकर चलते हैं यह जग जाहिर है । कोल्हान रक्षा संघ ने तय किया है कि श्रम अधीक्षक एवं जिले के मुखिया स्वयं की चलाकी के शिकार अब आम मजदुर नहीं होगें । भ्रष्ट अधिकारियों को कोल्हान रक्षा संघ ने साफ कहा है कि जमीन सरायकेला स्टेट का रहा है जिसका मार्जर एग्रीमेंट भारतीय अधिराज्य के साथ है , उनका शोषण किसी भी हाल में बर्दास्त नहीं होगा। वैसे इस जिला का श्रमिक शोषण एक बड़ा मुद्दा रहा है । लोकतंत्र मे अधिकारी जनता के शोषक नहीं वल्कि सेवक है अगर न्यूनतम मजदूरी देने में वे असमर्थ हैं तो कोल्हान रक्षा संघ दुध का दुध और पानी का पानी करना जानता है ।वे समय रहते समझ जाएं ताकि उनकी इज्जत बनी रहे । कोल्हान रक्षा संघ वैसे सभी मूलवासी लेवर को आवाज है जिनका कोई नहीं सुनता। परिचर्चा में मजदुरो कि बात रखी जायेगी ।

पत्रकार गौतम जालंधरी, बलराज खन्ना व सन्नी खन्ना की माता का अंतिम संस्कार सम्पन्न,

अश्रुपूरित नेत्रों से दी विदायगी

संगरूर, 5 फरवरी (जगसीर सिंह)–

देश के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों अजीत, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर में ब्यूरो प्रमुख रहे व जागृति लहर डॉट कॉम के एडिटर गौतम जालंधरी, बलराज खन्ना व सन्नी खन्ना की माता जी श्रीमति रमा खन्ना (बहु शहीद नरेंद्र खन्ना) के कल देहांत के बाद आज बुधवार को पीरू बन्दा शमशान भूमि में अंतिम संस्कार कर दिया गया. जहाँ उनको अश्रुपूरित नेत्रों से अंतिम विदयगी दी गई.

वह कुछ समय से बीमार चल रहे थे. वह अपने पीछे तीन बेटे व एक बेटी छोड़ गये. Is अवसर पर पंजाब के पत्रकारों, सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक संस्थाओं के प्रमुखों/प्रतिनिधियों विधायक मदन लाल बग्गा, पक्षी सेवा सोसाइटी के चेयरमैन दर्शन लाल बवेजा, प्रधान अशोक थापर, पूर्व विधायक राकेश पांडे, भाजपा महासचिव जीवन गुप्ता, प्रवीण बंसल, आर डी शर्मा, परमिंदर मेहता, अमरजीत सिंह टिक्का, विपन विनायक, अश्वनी शर्मा, एपीआरओ जतिंदर कोहली, इंद्रजीत सिंह ढींगरा, डीके अरोड़ा, बिट्टू गुम्बर, राजेश मेहरा एडवोकेट, डीएस बेदी, वीके खुल्लर, नरेश शर्मा, राजू मलिक, मिंटा मलिक, सीनियर पत्रकार प्रमोद बातीश, अर्शदीप समर, नवीन शर्मा, रविंद्र अरोड़ा, पप्पी नागपाल, चन्द्रकांत चड्ढा, एडवोकेट रविंद्र गर्ग, अमित कुमार, भारत मुंजाल, जॉनी गोयल, रविंदर स्यान, राजन कैंथ, दविंडर डीके, सुखदेव, पारस दानिया, रेशम नत्त, अश्वनी वर्मा, अशोक विरमानी, पवन शर्मा, प्रदीप चोपड़ा, दीपक चोपड़ा, सोनू जैदका, सन्नी जैदका, राज शाही, सागर, आशा थापर, विशाल जैन, निधि जैन, देव दत्त चुघ, विशाल अब्रोल, राधिका कालडा, राजेश सरीन, अजय सिक्का, नरेंद्र महेंद्रु, राजीव आनंद, करनैल सैनी, अजय अरोड़ा, राहुल, कैप्टन गुरनाम सिंह, हीरा लाल गोयल, प्रवीण, विक्की कुंद्रा, नितिन जैन, अमित जैन, हरमित बग्गा, हरजिंदर बवेजा, अशोक साई, तिरलोचन सिंह, अश्वनी गोगना, हेमराज, गुरप्रीत मेहदुदा, सुरेंद्र गिल, अशोक मल्हा, रमेश क्वतरा, अतुल सहगल, मनजीत सिंह, जोनी, सुखदेव स्लेमपुरी सहित अन्य ने पत्रकार गौतम जालंधरी, पत्रकार बलराज खन्ना व सन्नी खन्ना के साथ गहरी संवेदना प्रकट की है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023